CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

1205

9205

6.2V

धूर्त बनिया

किसी गांव में एक किसान और एक बनिया रहते थे। दोनों ही बहुत गरीब थे।

किसान के पास जो भूमि थी, वह बहुत ही उपजाऊ थी, लेकिन किसान के पास इतना पैसा भी नहीं था, कि वह बाजार से अच्छे बीज खरीदकर बो सके।

वैसे भी वह गांव के साहूकारों के कर्ज तले दबा था। बहुत ही मुश्किल से उस किसान का गुजारा हो पाता था।

इधर बनिए की दुकान भी अच्छी तरह से नहीं चलती थी। बनिया बड़ी मुश्किल से अपना गुजारा कर रहा था।

आखिरकार दोनों ने उस गाँव को छोड़ने का इरादा कर लिया और एक दिन दोनों कुछ समान अपनी पोटली में बांध गांव छोड़कर चल दिए।

एक दोराहे पर किसान और बनिए की मुलाकात हुई। दोनों ने एक-दूसरे को अपनी दुःख भरी कहानी सुनाई, दोनों एक दूसरे के मित्र बन गए।

बनिया किसान से बोला—

'भाई, हम दोनों अपना गांव छोड़कर परदेश जा रहे हैं,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्यों न दोनों एक साथ रहें, एक से दो भले।'

किसान को बनिए का सुझाव पसन्द आ गया और वह बोला—

'भाई तुम ठीक ही कहते हो, परदेश में तो अकेले रहना भी दुर्लभ हो जाएगा, पास में पैसा नहीं है, क्यों न दोनों कहीं चलकर कोई व्यापार करें और धन कमायें।'

बनिया तो चाहता ही यह था, वह तुरन्त तैयार हो गया। दोनों साथ-साथ एक दिशा की ओर चल दिए, काफी समय तक चलने के पश्चात् वे एक गांव पहुंच गए।

गांव पहुंचने के पश्चात् किसान बनिए से बोला—भाई, मुझे तो बहुत भूख लगी है, साथ में थक भी गया हूं कुछ खाने और रहने का इन्तजाम करो न, तुम तो बनिए हो, और यह प्रसिद्ध है कि बनिए बड़े चालाक होते हैं, अगर तुमने खाने और रहने का प्रबन्ध कर दिया तो मैं तुम्हें जानूंगा।'

'किसान भाई, इस परदेश में हमें बिना पैसे के कौन रखेगा, कौन खाना खिलाएगा, यह तो तुमने बड़ी गहरी समस्या मेरे सामने रख दी, यह काम तो कतई असम्भव है, भूख मुझे भी लग रही है, मैं भी थका हुआ हूं, अगर तुम ही खाने और रहने का इन्तजाम कर दो तो मैं तुम्हें जानूं, बनिए ने चतुरता से बात किसान पर टाल दी।

किसान भी बड़ा चालाक था, वह समझ गया कि बनिया पहले उसकी परीक्षा लेना चाहता है, तो वह बोला—

'अच्छा भाई, जब तुम यही कहते हो तो देखो मेरा कमाल, हमें भर पेट खाने को भी मिलेगा और रहने को भी।'

कहता हुआ किसान आगे बढ़ा, और सामने वाली झोंपड़ी का दरवाजा खटखटा दिया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुछ देर पश्चात् एक बुढ़िया ने दरवाजा खोला।

किसान झट बोला—

'माई, क्या हम कुछ देर आपके यहां आराम कर सकते हैं?'

'तुम लोग कौन हो, कहां से आए हो? कहां जा रहे हो? बुढ़िया ने उनके चेहरे देखते ही तुरन्त तीन प्रश्न किए।

किसान चालाकी से बोला—

'माई, हम राजा के खास सैनिक हैं, पिछले गांव से आ रहे हैं, और अब कुछ समय इस गांव में रहकर वापिस लौट जायेंगे।'

बनिया किसान का यह झूठ सुनकर चकित रह गया।

'अच्छा, आ जाओ सिपाही भाई, लेकिन तुम लोग इस भेष में क्यों हो।' बुढ़िया ने पूछा।

'हम लोगों को इसी तरह से भेष बदलकर घूमना-फिरना पड़ता है, हम राजा को इस छन्द भेष में प्रजा के दुख-सुख का हाल बताते हैं।' किसान ने कहा।

'अच्छा तो यह बात है, देखो भाई मैं बहुत ही गरीब व दुखिया हूं मेरी सिफारिश राजा से जरूर करना।' बुढ़िया ने मन-ही-मन प्रसन्न होते हुए कहा।

किसान और बनिया एक स्थान पर बैठ गए।

तब किसान बोला—

'माई कुछ खाने को दोगी हमें, हम बहुत भूखे हैं।'

बुढ़िया के पास हर चीज बहुत तादाद में थी, लेकिन वह थी बहुत कजंस और इसीलिए उसने बहाना बना दिया कि वह बहुत गरीब है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'अरे; भैया, मैंने तो खुद कल से कुछ नहीं खाया है। बुढ़िया मुंह उदास बनाते हुए बोली।

'अच्छा, अगर तुम्हारे पास कुछ नहीं है तो न सही, तब किया ही क्या जा सकता है।' किसान ने इधर-उधर देखते हुए कहा।

तभी उसकी दृष्टि एक छोटे से पत्थर पर पड़ी। किसान प्रसन्नता से बोला—

'और कुछ नहीं तो चलो, इस पत्थर की खिचड़ी बन जाएगी सो हम दोनों का पेट भर जाएगा।'

बुढ़िया किसान का मुंह ताकती रह गई। भला पत्थर की खिचड़ी। जब उससे नहीं रहा गया तो वह बोल ही उठी—

'भैया, पत्थर की खिचड़ी कैसे बन सकती है, कहीं तुम मुझे मूर्ख तो नहीं बना रहे।'

'अरे, माई, तूने कभी पत्थर की खिचड़ी नहीं खाई क्या ?

'नहीं···तो।' बुढ़िया आश्चर्य से बोली।

'तो फिर आज हम तुम्हें पत्थर की खिचड़ी अवश्य खिलायेंगे।'

'अरी माई पत्थर की खिचड़ी तो इतनी स्वादिष्ट बनती है कि तुम खाकर अपनी उंगलियां चाटती रह जाओगी।'

'अच्छा, यह बात है तो आज मुझे पत्थर की खिचड़ी ही बनाकर दिखाओ अगर वास्तव में ऐसा हो गया तो मेरा जीवन तो आराम से कट जाएगा।' बुढ़िया प्रसन्नता से बोली, तभी किसान बोला—

न, न माई, हम तुम्हें पत्थर की खिचड़ी बनाने की तरकीब नहीं बतायेंगे, यह तरकीब हमने किसी साधू से पचास रुपये

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

में सीखी थी, भला तुम्हें मुफ्त में कैसे सिखा दें, अब तो मैं खिचड़ी बिलकुल भी नहीं बनाऊंगा।' किसान ने जल्दी से कहा।

बुढ़िया झट किसान की खुशामद करने लगी बोली—'भाई मेरे पास पचास रुपए तो नहीं, केवल तीस रुपये मात्र हैं, वह तीस रुपये तुम ले लो, लेकिन मुझे पत्थर की खिचड़ी बनाने का तरीका अवश्य बता दो, बेकार में मुझे बाजार से रोजाना सब्जी खरीदनी पड़ती है, और उसके साथ आटा, चावल।

'अच्छा माई, न जाने क्यों मुझे तुम पर दया आ रही है, इसलिए केवल तीस रुपये में ही तुम्हें पत्थर की खिचड़ी बनाने का तरीका बताये देता हूं, तुम्हारे स्थान पर और कोई होता तो मैं सौ रुपये से कम में यह चमत्कारिक तरीका कभी नहीं बताता, लाओ तुम तीस रुपये दो।' किसान ने ऐसे स्वर में कहा जैसे वह बुढ़िया पर कोई बहुत बड़ा एहसान कर रहा हो।

बुढ़िया ने झट एक सन्दूक से तीस रुपये निकालकर किसान के हाथ पर रख दिए।

तीस रुपये को किसान अपनी धोती में लपेटता हुआ बोला।

'माई, तुम मुझे तुरन्त एक बर्तन दो।'

बनिया आश्चर्य से चुपचाप अपने स्थान पर बैठा हुआ किसान की विचित्र बातें सुन रहा था इतना तो बनिया भी समझ चुका था कि किसान अपनी चतुराई बुढ़िया को दिखा रहा है।

बुढ़िया जैसे ही बर्तन लेने गई, बनिया किसान से बोला—'क्यों भाई, यह कौन-सा चमत्कार बुढ़िया को दिखा रहे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हो ?'

किसान मुस्कराकर बोला—'बस देखते जाओ, अभी तुम्हें खिचड़ी खाने को मिलेगा।'

जल्दी ही बुढ़िया एक बर्तन ले आई।

किसान ने पत्थर को खूब धो-धोकर बर्तन में रखा और पानी डालकर चूल्हे पर चढ़ा दिया।

अचम्भे से बुढ़िया की आंखें मानों निकली पड़ रही थीं।

किसान एक चम्मच लेकर बर्तन में चलाने लगा। फिर थोड़ा-सा पानी चमचे में निकालकर चखा। फिर बोला—

'बहुत जल्दी तैयार हो जाएगा, मगर मैं क्या करूं नमक, मिर्च तो मेरे पास हैं नहीं।'

'मेरे पास है थोड़ा सा।' बुढ़िया बोली। फिर नमक-मिर्च लाकर बोली—'लो यह डाल दो।'

किसान ने नमक-मिर्च पानी में डाल दिया और पानी को फिर चखा।

'थोड़ा सा अधकुटा चावल और थोड़ी सी दाल और होती तो बस, मजा आ जाता।' किसान ने कहा।

बुढ़िया तुरन्त अपने रसोईघर की ओर दौड़ी और एक बर्तन में दाल और चावल ले आई।

'लो, जितनी जरूरत हो डाल दो।'

किसान ने दाल और चावल पानी में डाल दिए और चमम्च को चलाता रहा। अन्त में उसने फिर चखा।

बुढ़िया टकटकी बांधे उसे देख रही थी।

'आहा—बड़ी बढ़िया खिचड़ी तैयार हुई है।' किसान प्रसन्नता से झूमता हुआ बोला—'बस जरा घी और होता तो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फिर क्या कहने थे।'

बुढ़िया घी भी ले आई।

और खिचड़ी में मक्खन भी डाल दिया गया।

खिचड़ी बिल्कुल तैयार हो चुकी थी।

और तीनों ने खिचड़ी खाना शुरू कर दिया। वे खाते जाते थे और तारीफ करते जाते थे।

'वाह भाई।' बुढ़िया ने आश्चर्यचकित होते हुए कहा—'पत्थर की खिचड़ी इतनी मजेदार बनती है, यह तो मैंने कभी सोचा ही न था।'

किसान और बनिया मन-ही-मन हँसते हुए खिचड़ी खा रहे थे।

दोनों का पेट उस खिचड़ी से भर गया।

'भैया।' बुढ़िया बोली—'तुम दोनों आराम करो, मैं तब तक जरा एक स्थान से होकर आती हूं।'

माई के जाते ही बनिया बोला—'वाह, भाई किसान मान गए तुम्हारी बुद्धि को कितनी होशियारी से बुढ़िया को मूर्ख बनाया है, जवाब नहीं तुम्हारा, जिसका जूता उसी के सर, ऊपर से तीस रुपये भी कमा लिए, खैर अब मेरा नम्बर है, कल सुबह तुम यहां आराम करोगे और मैं कमाने जाऊंगा, और देखना यह कि मैं कल कितना कमा कर लाता हूं।'

'देखो भई, पहले एक समझौता कर लो, जितना हम दोनों मिलकर या अलग-अलग होकर इस परदेस में कमायेंगे अपने गांव जाते समय आधा-आधा कर लेंगे।' किसान बोला।

'वाह भाई किसान यह कोई कहने की बात है, हम दोनों अब पक्के मित्र हैं, अतः आपस में दोनों बांटकर ही खायेंगे।'

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बनिया बड़े ही प्यार से बोला।

दोनों आपस में बातें करते-करते सो गए।

अगले दिन बनिया तैयार हो बुढ़िया की झोंपड़ी से निकल पड़ा। बुढ़िया को किसान ने कह दिया था कि आज उसके मित्र की बारी है, आज वह गांव का मुआयना करने जाएगा। अतः बुढ़िया को उन दोनों पर किसी प्रकार का सन्देह नहीं हुआ था।

किसान दिन भर झोंपड़ी में आराम करता रहा।

इधर बनिया घूमते-घमते लोगों से कुछ पूछते-पाछते एक अन्य बुढ़िया के घर जा पहुंचा।

उस बुढ़िया के दो बेटे थे। बुढ़िया काफी धनवान थी। उसका एक बेटा मर चुका था और दूसरा बेटा कहीं बाहर गया हुआ था।

बनिए को यह सब जानकारी हो चुकी थी अतः वह उस बुढ़िया के घर पहुंचकर बोला—

'मुझे कुछ समय तक यहीं रहने दो दादी, मैं बहुत थक गया हूं।'

बुढ़िया काफी दयावान थी, अतः प्रेमपूर्वक बोली—

'अन्दर आ जाओ बेटा, तुम कहां से आ रहे हो?'

'मैं तो दूसरी दुनिया का रहने वाला हूं दादी, और उस दुनिया से पैदल ही चला आ रहा हूं, बहुत दिनों से मैंने कुछ खाया पीया भी नहीं है।' बनिए ने बात बनाते हुए कहा।

'मैं अभी तुम्हारे लिए भोजन लेकर आती हूं बेटा, तब तक तुम आराम करो।' बुढ़िया बोली और रसोईघर की ओर चली गई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुछ ही समय पश्चात बुढ़िया बनिए के लिए नाना प्रकार के स्वादिष्ट भोजन लेकर आई।

बनिए ने उठकर भोजन किया। तब बुढ़िया बोली—

'बेटा, यह तुम्हारी दुनिया कौन सी हुई ?'

'दादी यह दुनिया वह है जहाँ इस दुनिया से जाने वाले लोग रहते हैं, मेरा मतलब है जो इस दुनिया में मर जाते हैं, वे उस दुनिया में जाकर रहते हैं, ऐसी और भी बहुत सी दुनिया हैं।' बनिए ने बुढ़िया को पट्टी पढ़ाते हुए कहा।

बुढ़िया बहुत भोली भाली थी फौरन बनिए की बातों में फंस गई, बोली—

'सचमुच ! मेरे लड़के को मरे कुछ दिन हुए हैं। क्या उससे तुम्हारी वहां भेंट हुई थी।'

'तुम्हारे बेटे का क्या नाम है दादी ?' बनिए ने जानबूझ कर पूछा।

'उसका नाम किशन है बेटा।' बुढ़िया ने उत्सुकता से पूछा।

'किशन।' बनिया चौंकने का अभिनय करता हुआ बोला —'अरे दादी किशन तो मेरा गहरा मित्र है, वह और मैं तो एक ही कमरे में रहते थे।'

'सचमुच।'

'हां दादी, लेकिन अब तो वह दूसरी दुनिया में मछली पकड़ता है, मच्छीचारा है।' बनिया यकायक उदास होकर बोला।

'हाय—बेटा···यह तो बहुत कठिन काम होगा।' बुढ़िया ने व्याकुल होकर पूछा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'और नहीं तो क्या? आप तो जानती हैं दादी कि मछलियां पानी में रहती हैं और उसे पकड़ने के लिए कितनी मेहनत करनी पड़ती है, मैंने तो किशन से कितनी बार कहा कि यह धन्धा छोड़ दे, लेकिन वह बेचारा भी क्या करे उसके पास तन ढ़ांपने के लिए कपड़े तक नहीं, पेट कैसे भरे, बेचारा सुबह से शाम तक मछलियां पकड़ता है, फिर भी उसे पेट भर भोजन नहीं मिलता, काश उसके पास पैसे होते—तो वह वहां एक अच्छा व्यापार कर लेता और सुख से अपना जीवन बिताता।' बनिए ने एक लम्बी गप्प बुढ़िया को सुनाते हुए कहा।

बुढ़िया की आंखों से टप-टप आंसू गिरने लगे।

'दादी तुम तो रोने लगी, अरे इसमें रोने की क्या बात है, मैं इसलिए तो तुम्हारे पास आया था, यह तो मेरा सौभाग्य है कि मैं सीधे तुम्हारे पास ही पहुंच गया, वरना न जाने मुझे तुम्हारा घर ढूंढने के लिए कहां-कहां भटकना पड़ता। अगर तुम चाहो तो किशन की पैसे से मदद कर सकती हो।'

'हां···हां···बेटा, अवश्य करूंगी, कौन मां ऐसी होगी, जो अपने बेटे को दुःख में सुनकर भी चैन से खाना खा सकेगी।' बढ़िया ने जल्दी से कहा और फिर एक सन्दूक से दो सौ रुपए और चालीस गज कपड़ा निकालकर बनिए को देती हुई बोली—'बेटा, इस समय तो मेरे पास इतना ही है, क्या तुम यह रुपये और कपड़ा मेरे बेटे किशन तक पहुंचा दोगे।'

'अवश्य पहुंचा दूंगा दादी, किशन के लिए ही मैं इतनी दूर से आपके पास आया हूं, तुम चिन्ता न करो दादी, अब किशन के दिन फिर जायेंगे, अच्छा दादी मैं अब चलता हूं, किशन को जल्दी से जल्दी ये रुपये और कपड़े पहुंचाने हैं न।, बनिए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ने बुढ़िया से विदा लेते हुए कहा।

बुढ़िया ने बनिए को आशीर्वाद दिया और बनिया अपने रास्ते चल पड़ा।

संध्या के समय बनिया पहली वाली बुढ़िया की झोंपड़ी में पहुंच गया। किसान ने जब बनिए को कपड़े और रुपए के साथ वापिस लौटते देखा, तो आश्चर्यचकित हो उठा।

बुढ़िया उस समय कहीं बाहर गई हुई थी बनिए ने हंसते-हंसते किसान को सारी कहानी कह सुनाई। किसान उसकी तारीफ करते हुए बोला—

'वाह भाई वाह, मान गया मैं तुम्हें भी, कितने कमाल से तुमने उस बुढ़िया को मूर्ख बनाया। अब मेरा नम्बर है, कल सुबह मैं धन्धे से निकलूंगा, अब देखना यह है कि मैं क्या कमा कर लाता हूं।' किसान ने कहा।

दोनों ने फिर बुढ़िया को मूर्ख बनाकर खाना खाया, और सो गए।

अगले दिन किसान झोंपड़ी से तैयार होकर धन्धा करने निकल पड़ा।

चलते-चलते वह एक जमींदार के बाग में जा पहुंचा। वहां किसान ने देखा, एक सुअरी अपने बच्चों के साथ घूम रही है। किसान के दिमाग में फौरन एक तरकीब आई।

किसान सुअरी के सामने घुटने टेककर बैठ गया और जमीन से माथा छूकर सुअरी को नमस्कार करने लगा।

जमींदारिनी ने खिड़की से यह देखा तो अपनी नौकरानी से बोली—

'जाओ···जरा उस किसान से पूछो कि वह जमीन पर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माथा क्यों टेक रहा है ?'

नौकरानी तुरन्त बगीचे में पहुंची और किसान ने बोली—

'ओ किसान, तुम घुटनों के बल बैठे हुए हमारी सुअरी के सामने क्यों माथा टेक रहे हो ?'

किसान तुरन्त बात बनाते हुए बोला—'ऐ नौकरानी, जा अपनी मालकिन से कह दे कि उनकी सुअरी है चिककबरी और इसलिए वह है मेरी घरवाली की बहन। मैं उसे अपने लड़के को शादी में बुलाने के लिए आया हूं। शादी कल हो रही है। जरा अपनी मालकिन से पूछकर आ कि क्या वह अपनी सुअरी को मेरे यहां जाने देगी ? उसे वहां ब्याह का सारा काम-काज सम्भालना होगा और इसकी बच्चियों को दुल्हन की सहेलियां बनना पड़ेगा।'

नौकरानी ने जाकर सारा किस्सा जमींदारनी को कह सुनाया। जमींदारनी ने यह सब सुना तो वह अपनी नौकरानी से बोली—

'कैसा बेवकूफ आदमी है यह कि सुअरी को और वह भी उसके बच्चों के साथ उसको शादी में बुलाने आया है।'

अच्छा है, लोगों को हंसने दो उस पर। सुअरी को मेरा रोयेंदार कोट पहना दो और गाड़ी में घोड़ों की जोड़ी जुड़वा दो। ये सब खूब ठाठ के साथ गाड़ी में बैठकर शादी के लिए जायेंगे।'

तुरन्त गाड़ी में घोड़े जोत दिये गए। उस पर सुअरी को रोएंदार कोट पहनाकर उसको उसके बच्चों समेत बिठाकर किसान गाड़ी में चढ़ बैठा और बुढ़िया के घर की ओर रवाना हो गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जब जमींदार घर लौटा, जो कि शिकार खेलने गया हुआ था, तो उसकी बीबी झटपट उसके पास गई। मारे हंसी के जमींदारनी का बुरा हाल था। वह बोली—

'ओ, हो ! कैसे मजे की बात, तुम नहीं देख पाये। तुम्हारे साथ मिलकर हंसने में तो और मज़ा आता। आज ही यहाँ एक किसान आया था और हमारी सुअरी के सामने बैठा माथा टेक रहा था। बोला—

आपकी सुअरी है चितकबरी और इसलिये वह है मेरी घर वाली की बहिन और इसलिये उसने हमसे कहा कि सुअरी को उसके लड़के की शादी में जाने की इजाजत दे दी जाए, जिससे वह व्याह का सारा काम-काज सम्भाल सके और सुअरी के बच्चे दुल्हन की सहेलिया बन सकें।'

'मैं जानता हूं, तुमने क्या किया होगा।' जमींदार बोला—

'तुमने बच्चों सहित सुअरी उसे दे दी होगी, है न ?'

'हां जी, मैंने सुअरी को अपना रोएंदार कोट पहनाया और उसके अलावा घोड़ों की जोड़ी के साथ एक गाड़ी भी किसान को दे दी।

जमींदार तुरन्त समझ गया कि किसी ने उसकी पत्नी को मूर्ख बनाया है, वह तुरन्त बोला—

'वह किसान कहां का रहने वाला था ?'

'यह तो मुझे नहीं मालूम।' जमींदार की बीबी आश्चर्य से बोली।

'तुम मूर्ख हो, जो तुम इतना भी नहीं समझ सकी कि क्या कभी सुअरी भी किसी की बहन हो सकती है ?' जमींदार ने क्रोध से कहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जमींदार अपनी बीबी से बहुत नाराज था कि उसने अपने को इस तरह से बेवकूफ बन जाने दिया। वह फौरन घर से बाहर निकला और कूदकर घोड़े पर चढ़ गया और किसान का पीछा करने के लिए चल पड़ा।

किसान ने अपने पीछे घोड़े की टाप सुनी तो घोड़ा गाड़ी को एक घने जंगल में छिपा दिया और अपनी टोपी को जमीन पर रख कर रास्ते के किनारे बैठ गया।

'अरे, ओ डाढ़ी वाले।' जमींदार ने चिल्लाकर उससे पूछा।

'क्या इधर कहीं पर तुमने घोड़ा गाड़ी के साथ एक किसान को देखा है जिसकी गाड़ी में एक सुअरी और उसके बच्चे बैठे हैं?'

'हां, मालिक मैंने देखा है। कई घन्टे हुए वह इधर से गुजरा था।' किसान ने चालाकी से कहा।

'वह किस तरफ को जा रहा था? मुझे उसे पकड़ना है।'

'उसे पकड़ना तो काफी मुश्किल काम है। अब तो वह बहुत दूर निकल गया होगा, और हो सकता है, आप रास्ता भूल जाएं। इस इलाके को अच्छी तरह से जानते तो हैं न आप?' किसान ने कहा।

'सुनो, भले आदमी, तुम जाओ और उस किसान को पकड़ कर ले आओ।'

'नहीं मालिक, यह तो मैं नहीं कर सकता। मेरी टोपी के नीचे एक बाज बैठा हुआ है।'

'तो क्या हुआ! तुम्हारे पीछे मैं तुम्हारे बाज की रखवाली करूंगा।'

'मगर इसका ख्याल रखियेगा कि वह टोपी के नीचे से

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निकल न जाए। बहुत कीमती बाज है। मुझसे खो गया तो मेरा मालिक मेरा जीना दुर्लभ कर देगा।'

'क्या कीमत है इस बाज की?'

'पूरे पांच सौ रुपये?'

'अच्छा तो घबराओ नहीं। मुझसे यदि तुम्हारा बाज खो गया तो मैं तुम्हें उसके दाम दे दूंगा।'

'कोरी बातों से रोटी नहीं चुपड़ी जाती मालिक।' किसान ने जमींदार को जैसे ताव दिलाया।

'अरे तुम तो मुझ पर यकीन नहीं करते।' अच्छा, यह लो पांच सौ रुपये। अब तो हो गया तुमको भरोसा?'

किसान रुपए लेकर जमींदार के घोड़े पर सवार हो गया और यह जा वह जा। देखते-देखते वह घने जंगल में गायब हो गया।

इधर जमींदार खाली टोपी की रखवाली करने लगा। इन्तजार करते-करते उसे घन्टों बीत गए। सूरज छिपने का वक्त हो गया था लेकिन किसान का कहीं अता-पता न था।

'देखूं, इस टोपी के नीचे कोई बाज है भी या नहीं, अगर है तो वह जरूर लौटेगा। अगर नहीं है तो इन्तजार करना बेकार है। यह सोच जमींदार ने टोपी उठाकर देखा! वहां बाज-वाज कुछ नहीं था।

'बदमाश, बेईमान! मालूम पड़ता है, यह वही किसान था जिसने मेरी बीबी को धोखा दिया था।'

खिन्न होकर जमींदार ने जमीन पर थूक और फिर पैदल ही लड़खड़ाता-सा अपने घर के लिए रवाना हो गया।

इधर किसान पशुओं के व्यापारी के पास पहुंचा। उसके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पास तीन घोड़े, एक गाड़ी, सुअरी और उसके बच्चे थे किसान ने उन सबको पांच हजार रुपयों के बदले उस व्यापारी को दे दिया और खुशी-खुशी बुढ़िया की झोंपड़ी की ओर लौट पड़ा।

बनिया बड़ी बेचैनी से किसान के आने की राह देख रहा था, क्योंकि किसान को गये काफी समय हो चुका था और अब तक उसे हर हालत में आ जाना चाहिए था।

बुढ़िया खाना खाकर सो चुकी थी। बनिया किसान की राह देखता हुआ अभी तक जाग रहा था।

तब किसान ने झोंपड़ी में प्रवेश किया। बनिये ने बेचैनी से उसे देखते ही कहा—

क्या बात है मित्र तुम्हें आज इतनी देर कैसे हो गई। कहीं कोई चोट तो नहीं हो गयी, लगता है आज तुम खाली हाथ लौटे हो।' 'अरे भाई ऐसी कोई बात नहीं, लम्बा हाथ मारने में अवश्य देरी हो जाती है, मैंने काफी लम्बा हाथ मारा है और एक जमींदार और उसकी पत्नी को खूब मूर्ख बनाया है, क्या याद करते होंगे वे दोनों मुझे।' कहते हुए किसान ने बनिए को सारी कहानी सुना दी।

बनिया किसान की चतुराई को सुनकर दंग रह गया। आज किसान ने अपनी चतुराई से खूब लम्बा हाथ मारा था। बनिया बोला—'मित्र अब मेरी बारी है, कल मैं निकलूंगा अपने धन्धे के लिए, अब देखना यह है कि कल मैं तुमसे तगड़ा हाथ मारता हूं या नहीं।'

दोनों खा पीकर आराम से सो गए। अगले दिन भोर होते ही बनिया झोंपड़ी से निकल पड़ा।

बनिया इस बार किसान से भी ज्यादा तगड़ा हाथ मारना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चाहता था। अतः वह चलता-चलता उस गांव से निकलकर एक दूसरे गांव पहुंच गया।

उस गांव में त्यौहार का दिन था। कुछ किसान एक चबूतरे पर बैठकर अपने-अपने बारे में इधर-उधर की हांक रहे थे।

तभी गांव का एक महाजन उन किसानों के पास आया और अपनी शेखी बघारने लगा—

'मैं यह हूं, वह हूं, ऐसा हूं, वैसा हूं और यह कि मैं जागीरदार साहब की बैठक तक हो आया हूं।'

बनिए को फौरन एक तरकीब सूझी, वह उन किसानों की बैठक तक पहुंच गया और उस दुकानदार से बोला—

'छिः यह तो कुछ भी बात नहीं। अगर मैं चाहूं तो जागीरदार के साथ खाना भी खा सकता हूं।'

'क्या कहा ?' वह महाजन चौंक कर बोला—'तुम जागीरदार के साथ खाना खा सकते हो ?' मैं कभी भी नहीं मान सकता, तुम जैसे साधारण लोगों को तो वह अपने निकट फटकने भी नहीं दे सकता, शायद तुम इस गांव में नए-नए आए हो तभी ऐसी बातें कर रहे हो।

'अगर यह बात है तो मैं जागीरदार के साथ खाना खाकर ही दिखाऊंगा।' बनिया जल्दी से बोला।

'नहीं, तुम नहीं खा सकोगे।' महाजन चिल्लाया।

वे बहस करते रहे। अन्त में महाजन स्वयं ही बोला—

'देखो, यदि तुमने जागीरदार के साथ खाना खा लिया तो मेरे पास इस समय दस हजार रुपया है, वह सब तुम्हें दे दूंगा और यदि नहीं खा सके तो जीवन भर मेरा काम मुफ्त में करना होगा।'

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बनिया तो चाहता ही यही था, अतः वह मन ही मन प्रसन्न होता हुआ बोला—'मुझे तुम्हारी यह शर्त मन्जूर है।'

महाजन भी इस बात पर खुश था। उसने सोच लिया था कि यह मूर्ख व्यक्ति मुफ्त में उसे काम करने के लिए मिला।

बहुत सारे किसानों के बीच यह फैसला हुआ था, अतः न महाजन को यह डर था कि बनिया अपने वचन से मुकरेगा और न बनिए को यह डर था कि महाजन अपने वायदे से मुकरेगा।

लेकिन वे सब किसान अवश्य यह मन ही मन सोच रहे थे कि यह अजनबी अवश्य अपनी शर्त हार जाएगा और जीवन भर के लिए महाजन का नौकर हो जाएगा। क्योंकि सारे गांव वाले जागीरदार के स्वभाव से भली-भांति से परिचित थे।

बनिया तुरन्त जागीरदार के घर का पता पूछकर जागीर दार के घर पहुंच गया।

फिर जागीरदार के पास पहुंचकर बोला—

'हजूर मैं आपसे एकान्त में यह जानना चाहता हूं कि मेरी टोपी के आकार के स्वर्ण पिंड की क्या कीमत होगी ?'

जागीरदार ने कोई उत्तर न देकर सिर्फ ताली बजाई।

तुरन्त एक नौकर हाजिर हुआ।

'ऐ सुनो।' जागीरदार ने उस नौकर से कहा—'इस व्यक्ति के लिए और मेरे लिए बढ़िया-बढ़िया भोजन ले आओ। जल्दी करो! ये मेरे बहुत पुराने मित्र हैं। बैठो···बैठो, मित्र, आराम से बैठो, जो कुछ भी मेज पर है उसे खाओ।'

जागीरदार ने उसके साथ एक सम्मानित मेहमान की तरह वर्ताव किया। जागीरदार सोने का पिंड पाने के लिए [illegible]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन बहुत बेचैन हो रहा था।

भोजन समाप्त कर लेने के पश्चात् जागीरदार बनिए से बोला—

'अच्छा भैया, अब तुम जल्दी से वह स्वर्णपिंड ले आओ, मैं उसके बदले तुम्हें पांच हजार रुपये दूंगा।

बनिया मन-ही-मन मुस्कराया फिर बोला—

'हजूर मेरे पास तो को स्वर्णपिंड है वी नहीं। मैं तो सिर्फ यह जानना चाहता था कि मेरी टोपी के आकार के स्वर्णपिंड का मूल्य क्या होगा?'

जागीरदार को बहुत गुस्सा आया। वह क्रोध से चिल्ला कर बोले—

'तुरन्त निकल जाओ मूर्ख।'

'हजूर, मैं मूर्ख कैसे हो सकता हूं, जब कि आपने मेरे साथ एक सम्मानित मेहमान का सा वर्ताव किया और इसी के लिए ही महाजन को मुझे दस हजार रुपये देने पड़ेंगे।' कहकर बनिया खुशी-खुशी वहां से बाहर आया।

सारे किसानों ने और स्वयं महाजन ने वनिए को अपनी आंखों के सामने भोजन करते देखा था, अतः दस हजार रुपये मजबूर होकर महाजन को बनिए को देने पड़े।

बनिया खुशी-खुशी घर लौट आया। आज उसने किसान से भी बढ़कर हाथ मारा था।

बनिए को इतनी जल्दी वापस आता देख किसान को वड़ा ताज्जुब हुआ। जब बनिए ने किसान को सारी कहानी सुनाई तो किसान मन-ही-मन बनिए की प्रशंसा किए बिना न रह सका।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किसान बोला—

'अच्छा भाई, कल फिर मेरी बारी है, कल देखता हूं कि मैं क्या कर सकता हूं।'

दोनों ने फिर खाया पीया और सो गए। अगले दिन किसान फिर कुछ धन्धा करने निकला।

वह भी उस गांव को छोड़ दूसरे गाव की ओर चल दिया, बीच में एक नदी पड़ती थी, वह उस नदी को पार कर दूसरे गांव पहुंच गया।

अब किसान सोचने लगा कि अब क्या करे, कहां से इतना पैसा इकट्ठा करें कि बनिया उसकी बुद्धि का लोहा मान जाए।

सोचते-सोचते उसने सारे गांव का चक्कर लगाया। उस गांव में उसे एक ही व्यक्ति अपने मतलब का दिखाई दिया।

वह व्यक्ति एक धनी दुकानकार था।

किसान उस दुकानदार के पास जा पहुंचा। दुकानदार बहुत ही बातूनी था, जिस समय किसान उसके पास पहुंचा तो वह नोट गिनने में लगा हुआ था। किसान ने उसके हाथ में बहुत सारे रुपये देखे।

किसान को देखकर दुकानदार ने रुपये तुरन्त अपनी तिजोरी में रख दिए और किसान से बोला—

'आओ भाई आओ, क्या चाहिए तुम्हें ?'

किसान ने कहा—'मुझे दस मन आटा, नौ मन घी, पांच मन तेल, बीस मन चावल, एक बोरा नमक चाहिए।' इसके साथ ही किसान ने और भी बहुत सारी चीजों के नाम गिनवा दिए।

दुकानदार एक तगड़े ग्राहक को फंसता देखकर प्रसन्न हो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उठा। जल्दी से पहले उसने एक नौकर को भेजकर किसान के लिए कुछ खाने-पीने का सामान मंगवाया, फिर बोला—

'भाई, इतना सारा समान तुम्हें किसलिए चाहिए, क्या कोई दावत है।'

'हां भाई, मेरे यहां काफी समय पश्चात् एक बालक ने जन्म लिया है, सो उसी की खुशी में सारे गांव वालों को दावत दे रहा हूं।' किसान ने कहा।

'अच्छा भाई यह तो बहुत ही खुशी की बात है, कौन से गांव के रहने वाले हैं आप?' बनिया मन-ही-मन प्रसन्न होते हुए बोला।

'नदी पार के गांव का।' किसान ने जवाब दिया।

दुकानदार ने झट नौकर को किसान को बताई हुए चीजों को तोलने और निकालने के लिए कहा, और किसान से बड़े प्रेम से बोला—

'ओ···भाई साहब बैठो-बैठो अभी आपका काम हुआ जाता हैं।'

किसान को उसने दुकान के भीतर ही बैठा लिया। दुकानदार उससे बढ़-बढ़कर गप्प मारने लगा। वह चाहता था जब तक किसान का सामान निकले, तब तक वह अपनी गप्पों से किसान का दिल बहलाता रहे।

तभी किसान बोला—

'भाई आज तो मैंने अपनी जिन्दगी में सबसे आश्चर्यजनक चीज देखी है।'

'वह क्या?' दुकानदार आश्चर्य से बोला।

'जब मैं नदी पार करके इस गांव में आ रहा था तो मैंने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नदी में साँपों से भरी एक नाव देखी, नाव में रखे सांप इतने बड़े थे, कि उनकी पूंछ एक किनारे पर थी तो सर दूसरे किनारे पर।'

'अच्छा।' दुकानदार आश्चर्य व उत्सुकता से बोला। नौकर भी काम छोड़ किसान की बातों को ध्यान से सुनने लगा।

'हां भाई, मैंने तो अपने समस्त जीवन में इतने बड़े-बड़े सांप कभी नहीं देखे।' किसान ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा।

'यह कब की बात है।' दुकानदार ने उत्सुकता से पूछा।

'अरे अभी-अभी की तो, मेरा विचार है वह नाव अब भी नदी में ही होगी।'

'ओह!' दकानदार कुछ सोचकर बोला—'नदी तो बिल्कुल पास है, अगर आप जरा देर यहीं बैठे तो मैं भी देख आऊं उन सांपों को मैंने भी इतने बड़े सांप अपने जीवन में कभी नहीं देखे।' दुकानदार ने बेचैनी से कहा।

'हां···हां देख आओ।' किसान ने निश्चिन्त होकर कहा—'मैं तब तक यहीं बैठा हूं।'

दुकानदार फौरन उठकर नदी की ओर चल दिया।

तभी नौकर किसान से बोला—

'हजूर यदि आप मालिक से न कहें तो मैं भी चुपके से देख आऊं उन सांपों को।'

'अच्छा, भाई तुम भी देख आओ, मैं दुकानदार से नहीं कहूंगा, परन्तु आना जल्दी।'

नौकर दुकान से कूदकर तुरन्त नदी की ओर भागा।

किसान ने मौका साफ देखकर तुरन्त दुकानदार की तिजौरी से माल समेटा और अपनी राह पकड़ी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जब दुकानदार ने वापिस पहुंचकर किसान को नदारद पाया तो उसका माथा ठनका। क्योंकि उसे नदी में भी ऐसी कोई नाव नहीं दिखाई दी थी, जो सांपों से लदी हुई हो।

दूकानदार फौरन अपनी तिजौरी की ओर लपका, और तिजौरी को खाली देखकर उसने अपना माथा पीट लिया।

इधर किसान सांझ होने से पहले बनिए के पास पहुंच गया।

किसान को बहुत सारे रुपये लाते देख बनिया बहुत प्रसन्न हुआ। अब बनिया बोला—'भाई किसान अब हमारे पास काफी दौलत इकट्ठी हो चुकी है, अब तुम्हारा क्या इरादा है।'

'भाई, मेरा तो यह विचार है, कि कल हम दोनों मिलकर एक तगड़ा हाथ मारें और फिर वापिस अपने गांव की ओर लौट पड़ें।' किसान ने कहा।

'ठीक है, कल ऐसा ही करेंगे, इस बार दोनों साथ ही रहेंगे।' बनिए ने कहा। फिर दोनों ने पेट भर के खाया पीया और सो गए।

अगले दिन वे दोनों सबेरे-सबेरे उठे, उन्होंने बुढ़िया से कहा—

'माई आज हम दोनों ही काम से जा रहे हैं, और हो सकता है कि आज रात हम दोनों लौटें ही न, अगर ऐसा हुआ तो हम दोनों कल सबेरे आयेंगे।'

'जैसी तम्हारी इच्छा बेटा।' बुढ़िया ने कहा और दोनों निकल पड़े।

दोनों चलते-चलते उस गांव के पार गए। शाम होने को आ गई, दोनों चलते हुए एक नगर में पहुंचे।

रात होने वाली थी। अभी तक उन दोनों को ऐसी आसामी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नहीं मिली थी, जिस पर वे दोनों हाथ साफ करते।

दोनों ने आपस में सलाह की और रात गुजारने के लिए एक सेठ के दरवाजे पर पहुंच गये।

लेकिन वहां कई आदमियों को एक साथ रोते देखकर वे दोनों एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे। बनिया बोला—

'लगता है यहां कोई मर गया है।'

'हां बात तो कुछ ऐसी ही लगती है।'

'क्यों न यहीं पर अपना धन्धा शुरू किया जाए।' बनिया बोला।

दोनों ने आपस में कुछ सलाह की और दोनों स्वयं भी उन रोते हुए आदमियों के बीच बैठकर दहाड़ें मार-मारकर रोने लगे।

कुछ देर के बाद और लोग तो चुप हो गए, परन्तु बनिया और किसान सबके बाद भी रोते रहे और जब वे काफी समय तक रोने के पश्चात भी चुप नहीं हुए तो सेठ के लड़के ने पूछा—

'भाई मैं आप दोनों को पहचान नहीं रहा हूं। आप दोनों कौन हैं, और क्यों रो रहे हो? हम तो अपने पिता की मृत्यु के दुःख में रो रहे हैं। किन्तु आप दोनों को क्या हुआ है?'

बड़ी कठिनाई से आंसू पोंछने के बाद बनिए ने कहा—

'भैया, हमारा सर्वनाश हो गया। हम तो ऐसे लुटे कि सारे जीवन की कमाई चली गई।'

सेठ का लड़का आश्चर्य से बोला—

'किसने लूटा है आपको? और आप लोग यहां हमारे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दरवाजे पर क्यों रो रहे हैं।'

बनिए ने कहा—

'सारा माल तो तुम्हारे पिता ने ले लिया था, रोने क्या हम किसी और के दरवाजे जाते।'

सेठ का लड़का और अधिक आश्चर्यचकित हो उठा, वह कुछ भी न समझते हुए आश्चर्य से बोला—

'यह क्या कह रहे हैं आप! मेरे पिता ने आपसे माल लिया है।'

'हां भाई तुम्हारे पिता ने आज से पन्द्रह दिन पहले हमसे माल लिया था, अब वे मर गए···हमारा तो सर्वनाश हो गया ···हम क्या करें हम तो लुट गए।' बनिए ने कहा और फिर दोनों दहाड़ें मार-मारकर रोने लगे।

'अरे भाई तुम लोग रो क्यों रहे हो, मेरे पिता ने तुमसे माल आदि कुछ लिया है, तो वह कहीं लिखा पढ़ा तो होगा।'

'अगर भाई लिखा पढ़ा होता, तो रोना किस बात का था, हमारा उनका लाखों का व्यापार केवल जबान पर ही चलता था। हमने कभी कोई लिखा पढ़ी नहीं की। इसीलिए तो आज हमें रोना पड़ रहा है।'

बनिए और किसान ने अपने झूठे आंसुओं को पोंछ लिया और वहां पर मौजूद लोगों की ओर देखते हुए कहा—

'भाईयों, अब विश्वास का जमाना नहीं रहा। हमें क्या पता था कि सेठ जी ऐसे असमय में ही चल बसेंगे और तुम उनका कर्ज भी चुकाने से इन्कार कर दोगे।'

सेठ का लड़का उनकी बातें सुनकर सकपका गया और बोला—'किन्तु भाई इसका कोई प्रमाण जब तक आप लोग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नहीं देते, तब तक मैं आपका कर्ज कैसे चुका सकता हूं।'

बनिए ने कहा—

'और कोई तो प्रमाण हमारे पास नहीं है, किन्तु श्मशान में चलकर अपने पिता की राख से पूछ लेना, यदि हम सच्चे होंगे तो निश्चय ही राख का ढ़ेर कोई न कोई उत्तर देगा।'

लोगों ने बनिए का सुझाव मानकर सेठ के लड़के से श्मशान घाट पर जाने के लिए कहा।

परन्तु बनिया उसी समय बोल उठा—

'हम दो दिन से थके-मांदे हैं, थोड़ा भोजन विश्राम करके फिर श्मशान भूमि पर चलेंगे। अभी हमारे दो ऊंट माल लादे सराय के पास खड़े हैं। उन्हें जल्दी से व्यापारियों के पास पहुंचाना है।'

किसान और बनिया भोजन, विश्राम करने के बहाने वहां से हट गए।

एकान्त में जाकर बनिए ने किसान से कहा—

'तुम चुपके से जाकर सेठ की राख के पास एक गड्ढा खोद कर छिप जाओ। जब सेठ का लड़का पूछे तो बोलना—

'हां, बेटा मैंने इनसे बहुत-सा माल उधार लिया था।'

पहले उन दोनों ने डटकर भोजन किया, फिर किसान तो श्मशान भूमि की तरफ चल दिया और बनिया वापिस सेठ के घर की ओर चल दिया।

कुछ देर पश्चात् सेठ का लड़का बनिए के साथ शमशान भूमि गया।

यह अद्भुत करामात देखने के लिए और भी बहुत से लोग श्मशान भूमि पर इकट्ठे हो गए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किसान पहले से ही गड्ढा खोदकर छिपा बैठा था। सेठ के लड़के ने पूछा—

'पिताजी, क्या इन लोगों को आपको कुछ देना है।'

तो आवाज आई, जो किसान की ही थी—

'हां बेटा! मैंने इनसे बहुत माल उधार लिया था।'

लोगों को अब विश्वास हो गया सेठ के लड़के ने उन्हें बहुत सा धन देना मन्जूर कर लिया।

रात भर किसान और बनिया सेठ के यहां विश्राम करते रहे। सुबह सेठ के लड़के ने बहुत-सा धन एक गधे पर लादकर उन्हें दिया।

बनिया और किसान खुशी-खुशी बुढ़िया की झोंपड़ी की ओर चल पड़े।

चलते-चलते उन्हें दोपहर हो गई। रास्ते में एक वीरान जंगल पड़ता था। जैसे ही वे जंगल में घुसे उन्हें दूर धूल उड़ती दिखाई दी।

किसान और बनिया दोनों एक स्थान पर गधे समेत छिप गए।

कुछ ही देर में उन्हें सामने कुछ घुड़सवार एक पेड़ के सामने रूकते दिखाई दिये। किसान और बनिया अपने-अपने स्थानों पर छिपे हुए उन घुड़सवारों की कार्यवाही को आश्चर्य के साथ देख रहे थे।

जिस पेड़ के सामने वे घुड़सवार खड़ें थे वह पेड़ काफी मोटा था। वे घुड़सवार उस पेड़ के नीचे गड्ढा खोदने लगे, फिर उन्होंने घोड़ों से दो-तीन भारी थैले उतारकर उस गड्ढे में दबा दिए। गढ्ढे को फिर से भरने के पश्चात् वे घुड़सवार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वहां से चले गये।

किसान ने बनिए की ओर देखा फिर बोला—'अवश्य ये घुड़सवार कोई डाकू थे, उन्होंने अवश्य उस गड्ढे में धन छुपाया होगा। चलो चलकर निकाल लेते हैं।'

दोनों ने गड्ढे खोदे, और वे थैले निकाल लिए जो उन घुड़सवारों ने वहां दबाये थे। उन थैलों में सोने के सिक्के भरे थे। दोनों खुशी से फूले न समाए। वे थैले भी उन्होंने गधे पर लाद लिए और अपनी राह चल पड़े।

रास्ते में बनिया बोला—'भाई अब हमारे पास दौलत इकठ्ठी हो चुकी है, अतः अब हमें अपने गांव वापिस लौट चलना चाहिए।

जितनी दौलत अब हमारे पास है उसे आपस में आधा-आधा बांट कर हम दोनों आराम से अपना जीवन गुजार सकेंगे।'

'हां···भाई मैं भी यही सोच रहा था, अब इस बुढ़िया के पास भी ज्यादा दिन तक रहना ठीक नहीं होगा, हो सकता है हम दोनों किसी चक्कर में फंस जायें और हमारा सारा धन भी हाथ से जाता रहे।' किसान ने कहा।

'हां, भाई इसीलिए मैंने सोच लिया है कि आज रात को जब बुढ़िया सो जाएगी, हम चुपके से यहां से निकल चलेंगे।' बनिए ने कहा।

फिर वे बुढ़िया की झोंपड़ी पहुंच गये। दोनों बहुत प्रसन्न थे।

रात को जब बुढ़िया खाने आदि से निवृत होकर खूब गहरी नींद सो गई तो किसान और बनिए ने एक गधे पर अपने रुपयों से भरा बोरा लादा और चुपचाप झोंपड़ी से

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निकल पड़े।

दोनों मित्र खुशी-खुशी अपने गांव जा रहे थे। अब उनके पास धन की कमी नहीं थी।

इतने सारे धन को देखकर दोनों की नियत भीतर-ही-भीतर डोलने लगी थी।

रात उन दोनों ने एक स्थान पर जागते-जागते बिताई क्यों कि दोनों को एक-दूसरे पर सन्देह हो गया था।

सुबह उठकर फिर दोनों चल पड़े।

बनिया और किसान गधा हांकते चले जा रहे थे। कुछ दूर चलकर बनिए ने किसान से कहा—

देखो भाई, इतने बड़े शहर से हम घर लौट रहे हैं, आओ कोई बढ़िया-सी चीज ही घर के लिए लेते चलें।'

किसान ने सन्देह से बनिये की ओर देखते हुए कहा—

'जाओ, भाई, तुम्हें जो पसन्द आये वही मेरे लिए भी लेते आना।'

किन्तु बनिया बोला—

'नहीं, पहले तुम जाओ, अपने पसन्द की वस्तुयें खरीद लो मैं यहीं माल की रखवाली करता रहूंगा। फिर तुम माल की रखवाली करना और मैं वस्तुयें खरीदने जाऊंगा।'

किसान ने कहा—

'अच्छा।' और वह रुपये लेकर बाजार को चला गया।

किसान की बहुत दिन से यही मनोकामना थी कि वह जरी का कसीदेदार जूता खरीदेगा। अब वह अपनी हर मनोकामना पूरी कर सकता था, रुपये की अब उसके पास कोई कमी नहीं थी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सो बाजार में जाकर उसने एक बहुत ही सुन्दर जरी का जूता खरीद लिया।

थोड़ी देर के बाद जब वह बाजार से लौटकर आया, तो वहां न बनिया था और न गधा। किसान को बनिये की मक्कारी का पता चल गया। वह मन-ही-मन बोला—

'बेटा बनिए, तुम मुझसे बचकर कहां जाओगे। चलो मैं भी तुम्हारे पीछे-पीछे अभी आता हूं।'

किसान वहां से एक छोटे रास्ते पर चलकर बनिये से एक मील दूर आगे निकल आया। उसने देखा बनिया अभी बहुत दूर पीछे है।

तब उसने जरी का एक जूता रास्ते पर रख दिया और एक मील आगे निकल गया। फिर दूसरा जूता भी रास्ते में रख कर पास ही किसी झाड़ी में छिपकर बैठ गया।

कुछ देर के बाद बनिया गधा हांकता आया तो रास्ते में जरी का जूता देखकर झट उसे हाथों में उठा लिया।

और दूसरे जूते की तालाश में इधर-उधर देखने लगा।

किन्तु बहुत देर तक इधर-उधर देखने पर भी उसे दूसरा जूता न दिखाई दिया। तब वह अकेला जूता फेंककर फिर अपनी राह चलने लगा। एक मील और आगे चलने पर उसे दूसरा जूता भी रास्ते में चमकता दिखाई दिया।

बनिये ने लपककर जूता उठा लिया, किन्तु बोला—

यदि वह जूता भी मैं उठा लाया होता तो अब मेरे पास एक सुन्दर जरी के जूतों का जोड़ा होता। मैं भी कितना मूर्ख हूं।'

यह कहकर बनिये ने इधर-उधर देखा और गधे को एक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पेड़ से बांधकर पीछे का जूता लेने के लिए दौड़ पड़ा।

किसान बहुत देर से झाड़ी के पीछे इसी ताक में छिपा बैठा था।

उसने झट गधे को पेड़ से खोल सरपट घर की ओर हांक दिया।

घर पहुंचते ही उसने अपनी पत्नी से कहा—

'लो जल्दी से ये सारा धन उपलों के बीच में छिपाकर रख दो और मैं बाग के अधे कुएं में जाकर बैठता हूं। यदि बनिया मुझे पूछने आए तो कह देना कि अभी तक घर लौटकर नहीं आये।

कहकर किसान पास वाले बाग में अंधे कुएं में छिप गया।

इधर जब बनिया जूता लेकर वापिस पहुंचा तो गधा गायब था। बनिये ने समझ लिया कि यह चक्कर किसान ने ही चलाया है।

उसका माथा चकरा गया, किन्तु जैसे-तैसे वह शाम तक किसान के घर आ धमका। किसान की पत्नी उसे दरवाजे पर ही मिली। उसने पूछा—

जग्गू कहां हैं भाभी?

किसान की पत्नी ने कहा—

वे तो तुम्हारे साथ ही गये थे। उन्हें कहाँ छोड़ आये हो?'

बनिया समझ गया कि बात कुछ टेढ़ी हो गई है। सो वह चुपचाप घर चला गया।

किसान की पत्नी रोटियां पकाकर एक पोटली में बांध बाग के कुएं पर गई। किसान अन्धे कुएं में छिपा बैठा था। एक रस्सी में पोटली बांधकर उसकी पत्नी ने आवाज दी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

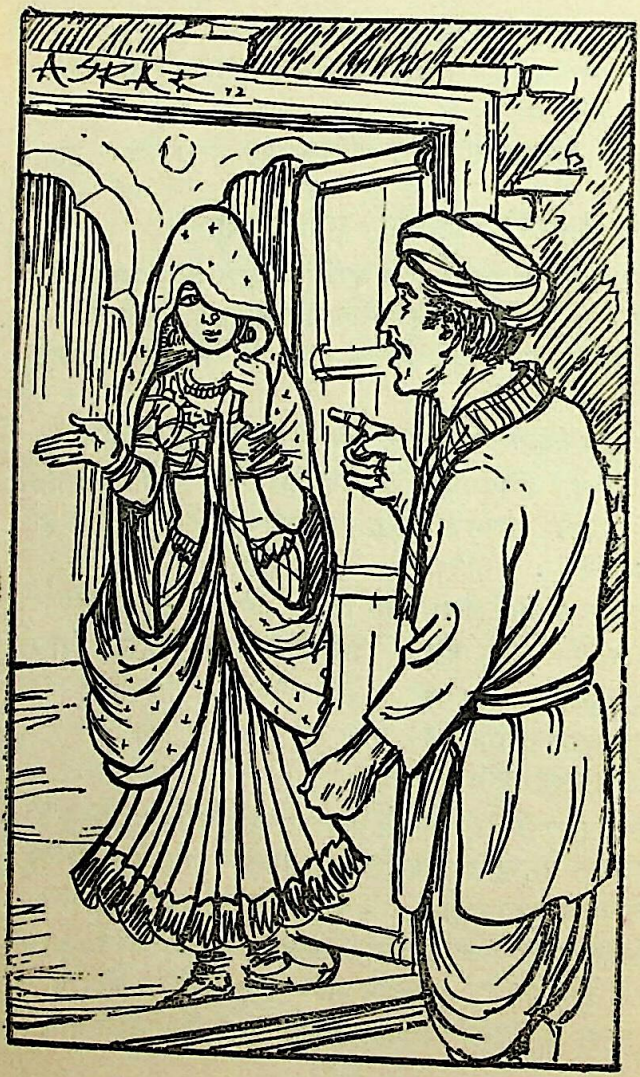

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'रोटियां ले लो जी।'

किसान ने अपनी पत्नी की आवाज़ पहचान रस्सी से पोटली खोल ली।

किसान की पत्नी वापिस चली गई। इसी तरह कुछ दिन बीत गए। किसान को उसकी पत्नी रोजाना की तरह रोटियां पहुंचा आती और किसान मजे में रोटियां खाकर अंधे कुएं में छिपा रहा।

बनिया रोज सवेरे आता और किसान की पत्नी से किसान के बारे में पूछता।

पर सदा उसे एक ही उत्तर मिलता और वह निराश होकर वापस चला जाता।

एक दिन बनिया दोपहर को किसान के घर आया, पर उस समय किसान की पत्नी घर पर न थी। उसने इधर-उधर खोज की तो वह बाग की ओर जाती दिखाई दी।

बनिया भी चुपचाप उसके पीछे हो लिया और चुपके से जाकर बाग के कोने में छिपकर बैठ गया।

किसान की पत्नी ने रस्सी कुएं में लटकाकर रोज की तरह आवाज दी—

'रोटियां ले लो जी।'

किसान ने पहले की तरह रस्सी से रोटियां निकाल लीं। किसान की पत्नी वापिस हो ली।

बनिया छिपा बैठा सब कुछ देखता रहा। उसे बात समझते देर न लगी।

दूसरे दिन वह स्वयं ही सूखी रोटियों की पोटली लेकर बाग में कुएं के किनारे जा पहुंचा और सूखी रोटियों की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पोटली रस्सी में बांधकर कुएं में पहुंचा दी फिर वह किसान की पत्नी की आवाज़ निकालता हुआ बोला—

'रोटियां ले लो जी।'

किसान ने रोटियां रस्सी से खोल लीं। किन्तु सूखी रोटियां देखकर वह बोला—

'अरे आज क्या बात है, जो सूखी ही रोटियां खाने को दे रही हो ?'

बनिए ने तुरन्त स्त्रियों जैसी आवाज में कहा—

'क्या करूं घर में घी समाप्त हो गया था, इसलिए बिना चुपड़ी ही रोटियां ही ले आई हूं।'

किसान ने चकित होकर कहा—

'घर में घी नहीं था, तो अभी जो मैंने इतना सारा धन लाकर दिया वह क्या हुआ, क्या तुमने वह धन फेंक दिया है, वह धन कहां गया ?'

बनिए ने बैसी ही आवाज में कहा—

'वह तो मुझे भूल गया कि तुमने उसे कहां छिपाकर रखा है।'

किसान बोला—

'अरे भाग्यवान ! अभी दो ही दिन तो हुए मैंने उसे उपलों के बीच में छिपाकर रखा था।'

बनिए ने पतली ही आवाज में कहा—

'ओ···हो ! अब याद आया। मैं तो उसे बिलकुल ही भूल गई थी। यह कहकर बनिया वहां से चला गया।

थोड़ी ही देर बाद किसान की पत्नी आई और कुएं में रस्सी लटकाकर बोली—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'रोटियां ले लो जी ।'

किसान चौंककर बोला—

'अरे क्या आज वास्तव में तुम्हारी याददास्त कमजोर हो गई है, अभी-अभी तो कुछ समय पूर्व तुम मुझे रोटियां दे गई हो, अब फिर दुबारा रोटियां लेकर आ गई हो ।'

किसान की पत्नी आश्चर्य से बोली—

'क्या कहते हो जी ! मैं तो पहली बार रोटियां लेकर आई हूं ।'

किसान बोला—

'तब मैं रोटियां खा चुका ! जल्दी से मुझे बाहर निकालो । उस धूर्त बनिये ने फिर हमें चकमा दे दिया ।'

किसान की पत्नी ने रस्सी खींचकर उसे बाहर निकाला । बाहर निकलते ही किसान घर की ओर दौड़ा ।

परन्तु घर पहुंचने पर उसने देखा कि सारा धन-माल वहां से उठ चुका था ।

किसान यह दूसरा चकमा खाकर बड़ा ही क्रोधित हो उठा और बनिये के घर की ओर चल पड़ा ।

उधर बनिए ने सारा धन ले जाकर घर में डाल दिया और पत्नी से बोला—

'अभी किसान आता ही होगा । मैं मरने का बहाना करके लेट जाता हूं । तुम उसे देखकर जोर-जोर से रोना शुरू कर देना और कहना—

'व्यापार करने गए थे, आते ही बीमार पड़ गए और चल बसे ।' कहकर बनिया फर्श पर लम्बा पड़ गया । उसने आंखें बन्द कर लीं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

थोड़ी देर में ही किसान बनिए के दरवाजे पर आ धमका। बनिए की पत्नी उसे देखते ही शोर मचा-मचाकर रोने-पीटने लगी।

किसान ने पूछा—

'क्या हुआ भाभी ?'

'कुछ न पूछो भैया।' बनिये की पत्नी रोते-पीटते बोली 'तुम्हारे भैया व्यापार करने गए थे, लौटते ही बीमार पड़ गए और चल बसे। हाय! अब मेरे दिन कैसे बीतेंगे।'

बनिये की पत्नी जोर-जोर से अपना सिर धुनने लगी।

किसान तुरन्त समझ गया कि बनिया फिर कोई चाल चल रहा है। उसे बनिये पर इतना क्रोध आया कि उसका जी करा कि पास पड़ा डंडा उठाए और धमाधम बनिए के सिर पर डंडों की वर्षा कर दे।

लेकिन किसान कुछ सोचकर खून का घूंट पीकर रह गया, वह बनिये को एक अच्छी सीख देना चाहता था।

बनिये की पत्नी अभी भी बुरी तरह से अपना सिर पीटे जा रही थी।

किसान बोला—

'घबराओ नहीं भाभी! मैं तुम्हारी हर प्रकार से सहायता करने को तैयार हूं। मैं पड़ोसियों को बुलाकर लाता हूं और श्मशान चलकर इन्हें जला देते हैं।'

बनिया आंखें बन्द किए सब कुछ सुन रहा था, अतः मन-ही-मन किसान की बात सुनकर कांप उठा। लेकिन इस समय स्थिति ऐसी थी कि वह कुछ भी नहीं कर सकता था। अतः वह चुपचाप पड़ा रहा, और इसी में उसने अपनी भलाई

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समझी।

देखते-ही-देखते किसान गांव के पांच-दस आदमियों को बुला लाया और वे बनिए को उठाकर श्मशान तक ले गए।

किन्तु उसकी पत्नी ने कहा—

'रात को मैं अपने पति को नहीं जलाने दूंगी।' तुम सब इन्हें यहीं छोड़कर चले जाओ प्रातः ही सब कुछ होगा।

उसके कहने पर और लोग तो वहां से वापस घर को चले गए, परन्तु किसान ने कहा—

'भाभी तुम भी घर चली जाओ। यहां इस डरावने श्मशान में रात को तुम्हारा रहना ठीक नहीं। मैं अकेले ही रात भर इन्हें बैठा देखता रहूंगा। सुना है रात को यहां भूत नाचते हैं।

बनिये की पत्नी का दिल कांप उठा और वह घर वापस जाने को सोचने लगी।

किन्तु उसके पति का क्या होगा! यही सोचकर वह अभी तक रुकी हुई थी।

लेकिन मन-ही-मन वह इतना डर गई थी, कि अब वह पत्ते के समान कांप रही थी।

'भाभी सोच क्या रही हो रात बहुत अधिक हो गई है, जल्दी घर चली जाओ, सुना है औरतों के सिर पर भूत चढ़ कर नाचते हैं।'

'अभी चली जाती हूं भैया।' बनिये की पत्नी कांपते स्वर में बोली। उन्हें बैठे-बैठे आधी रात होने को हो आई थी। किसान एक पत्थर पर बैठे बैठे ऊँघ रहा था। तभी किसान की नजर बचाकर बनिये के कान में उसकी पत्नी बोली—

'सुनते हो! और सब तो चले गये, पर तुम्हारा यह मित्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किसान यहां से जाने का नाम ही नहीं ले रहा है। मुझसे तो भूख और डर के मारे अब यहां नहीं बैठा जाता।'

बनिए ने धीरे से कहा—

'अच्छा तो तुम भी चली जाओ, मुझ पर जो बीतेगी अकेला ही निबटूंगा?'

बनिये की पत्नी भी वहां से चली गयी तो किसान ने अपने आपसे कहा—

'चल भाई जग्गू! तुम भी यहां से चल। जब सभी चले गये तो तू अकेला यहां बैठकर क्या करेगा।'

यह कहते हुए किसान अपनी जगह से उठा और पास ही के पेड़ पर चढ़कर बैठ गया।'

किसान का यह विचार था कि थोड़ी देर में सूनसान देखकर बनिया उठकर भागेगा। परन्तु वह चुपचाप कपड़ों में लिपटा वैसे ही पड़ा रहा।

थोडी देर के बाद दो चोर उधर से जाने लगे। उन्होंने लाश को पड़ी देखा तो उसके पास बैठ गये और बोले—

'यदि आज हमें अच्छा माल मिला तो लौटते समय हम इस लाश को नए कपड़े का एक थान लाकर देंगे।'

चोर वहां से चले गये और किसान पेड़ पर बैठा एक टक बनिए को देखता रहा। कुछ समय बाद जब थोड़ी ही रात बाकी थी तो दोनों चोर एक ओर से आये। पहले चोर ने एक नया थान बनिए के ऊपर डालते हुए कहा—

'तुम्हारी कृपा से मुझे हजारों रुपए का माल मिला। इस लिए मैं यह थान तुम्हें देता हूं।'

परन्तु दूसरे चोर ने कहा—'मुझे तो आज एक पैसा नहीं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिला। उल्टा पकड़ने से बचकर भागा हूं। इसलिए मैं तो इस दुष्ट के दांत तोड़ दूंगा।'

यह कहकर दूसरे चोर ने एक बड़ा पत्थर उठाया। तभी पेड़ पर बैठे किसान ने जोर से डाली को झझोड़ दिया। चोरों ने किसान को भूत के सिवाय और कुछ भी न समझा। वे भूत-भूत का शोर मचाकर ऐसे भागे कि मुड़कर पीछे की ओर फिर न देखा।

अचानक शोर मच जाने पर बनिया भी हिम्मत छोड़ उठ बैठा और वहां किसी को न देख कर चोरों का माल समेटने लगा तभी किसान पेड़ पर से उतरकर नीचे आ गया।

उसे सामने खड़ा देखते ही बनिया हक्का-बक्का होकर बोला—

'मित्र जग्गू! ठीक समय पर आए हो। लो आधा इसमें से ले लेना।'

'अब हम दोनों सच्चे मित्रों की तरह रहेंगे।'

उसके बाद वे मिलजुल कर सच्चे मित्रों के समान अपना जीवन बिताने लगे। दोनों एक दूसरे की बुरे समय में भरपूर सहायता करते, और एक-दूसरे के दुःख-सुख में हाथ बटाते।

□

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चोर राजकुमार

प्राचीन समय की बात है, नवल देश में एक राजा राज्य करता था। उसका यश चारों ओर फैला हुआ था। अन्य देशों के बड़े राजाओं में उसकी गणना होती थी। उसकी प्रजा भी उससे बहुत प्रसन्न थी। राजा के पास किसी चीज की कमी न थी। उसका राज्य हरा-भरा और धन-धान्य से परिपूर्ण था। दूर-दूर तक दृष्टि दौड़ाने पर बड़े-बड़े भवन और झरने, बाग दिखाई देते थे, जिनमें घूमते हुए लोग खुश ही नजर आते थे। किसी के भी मुख पर दुख के चिन्ह न थे। यही कारण था कि दूसरे देश के राजा उससे ईर्ष्या किया करते थे।

राजा की सात रानियां थीं परन्तु किसी की भी सन्तान न थी। यही राजा के लिए सबसे बड़ा दुःख का कारण था। परन्तु पहले-पहल राजा का इस ओर कोई ध्यान न गया। वह अपने आपको सबसे बड़ा राजा समझता था। उसे अपने आप में घमंड होने लगा। धीरे-धीरे वह इतना घमंडी हो गया कि वह सभी को अपने से तुच्छ समझने लगा। वह सारा दिन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राग रंग में खोया रहने लगा और राज्य-काय में अधिक ध्यान न देता। इसलिए धीरे-धीरे राज्य की अवस्था भी बिगड़ने लगी।

इन्हीं दिनों एक साधु उसके दरबार में आया। चूंकि राजा राग-रंग में खोया था इसलिए उसे साधु का आना बहुत बुरा लगा। उसने साधु को बुरी तरह से दुत्कार दिया। अपमानित साधु के क्रोध की सीमा न रही। उसने क्रोध में भरकर राजा को अभिशाप दिया कि तेरा यह सारा हरा-भरा राज्य खाक हो जाएगा। सिर्फ तेरा यह राजभवन ही रहेगा, जिसमें बैठ कर तू अपने राज्य का नाश देखेगा और मातम मनाएगा! तू नहीं जानता कि तूने किसका अपमान किया है? राजा ने साधु की बात को अनसुनी कर दी और मन्त्रियों को आदेश दिया कि इस साधु को दरबार से बाहर निकाल दो। मन्त्री उसे धक्के मारकर निकालने लगे। जाते-जाते साधु ने कहा, 'अगर तुझे अपने आप में इतना घमंड है तो सुन चार दिन के बाद पांचवे दिन तेरे देश में विनाश होगा, जिस पर तुझे इतना घमंड है।' साधु तो चला गया परन्तु राजा के लिए एक चिन्ता का कारण छोड़ गया। उसे अब कुछ अच्छा न लगा तो उसने नाच-गाना बन्द करवा दिया और अपने शयन कक्ष में जाकर लेट गया और इस बारे में सोचने लगा परन्तु उसके दिमाग में यह न आया कि साधु को बुलाकर उससे क्षमा मांग ले। कहावत है न जब गीदड़ की मौत आती है तो वह शहर की ओर भागता है, वही हाल राजा का था। उसके दिमाग में ठीक बात न आई परन्तु गलत विचार ने शीघ्र ही उस पर अपना अधिकार जमा लिया। उसने दूसरे दिन अपने मन्त्रियों को

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आदेश दिया कि जितने भी साधु इस देश में हैं सबको जेल में बन्द कर दिया जाय उसी दिन मन्त्री चारों ओर साधुओं की खोज करने लगे और जो भी साधु नजर आता उसे पकड़ कर जेल में बन्द कर देते। दो दिनों के भीतर ही भीतर उन्होंने सब साधुओं को जेल में डाल दिया। इन साधुओं में वह साध भी था जिसने राजा को अभिशाप दिया था। सब साधु बहुत अचरज में थे और दु:खी भी। परन्तु एक वही साधु था, जिसका राजा ने अपमान किया, जो इसका कारण जानता था कि उन्हें जेल में क्यों बन्द किया गया है। वही एक निश्चिन्त-सा दिखाई देता था।

जैसे-जैसे दिन बीतते जाते राजा की चिन्ता बढ़ती जाती। वह दिन भर तो किसी न किसी प्रकार अपने को भुलाये रहता परन्तु रात को उसकी चिन्ता उग्र रूप धारण कर लेती और रात भर उसे नींद न आती। एक-दो-तीन-चार और आखिर पांचवा दिन भी आया। एक-एक पल राजा के लिए भारी लग रहा था। ठीक दोपहर की घड़ी ने दो बजाए और जोर से हवा चलनी शुरू हो गई। राजा का दिल जोर-जोर से धड़कने लगा, परन्तु जो होना उसे कौन टाल सकता था। राजा को एक शोर-सा सुनाई दिया। राजा जल्दी से खिड़की की ओर बढ़ा उसने देखा दूर आग की लपटें दिखाई दे रही थीं जो आकाश को छूने को बेताब थीं। राजा समझ गया कि साधु ने सही बात कही थी। उसके कानों में साधू की एक-एक बात गूंजने लगी और उसका सिर चकराने लगा उसको अपने किए पर पछतावा होने लगा। परन्तु अब क्या हो सकता था। कुछ ही क्षणों में सारा राज्य खाक बन चुका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

था। सिर्फ राजा का महल और उसमें रहने वाले लोग और जेलखाना बचा था जिसमें सब साधु बन्द कर रखे थे।

राजा ने जब अपने राज्य का विनाश होते देखा तो उसे अपने कुकर्मों पर बड़ा पश्चाताप हुआ। उसका घमंड चूर-चूर हो गया। उसने अपनी भूल को स्वीकार किया और स्वयं जाकर जेलखाने के फाटक खोले और सब साधुओं को जेल से मुक्त कर दिया तथा वह उसी साधु के चरणों पर गिर पड़ा जिसका उसने भरे दरबार में अपमान किया था। पैरों पर गिर क्षमा मांगने लगा और गिड़गिड़ाने लगा कि जब तक आप मुझे माफी नहीं देंगे मैं आपके चरणों में यूंही पड़ा रहूंगा। साधु जो स्वभाव से दयालु था, उसे उस पर दया आ गई और उससे उसे क्षमा कर दिया। राजा बहुत खुश हुआ और खुशी से उसको आंखों में आंसू आ गए। वह साधु को बड़े आदर सहित राजमहल में ले आया और उसे अपने सोने के राजसिंहासन पर बिठाया जिसमें वह स्वयं बैठता था और साधु का खूब आदर-सत्कार किया। साधु समझ गया कि राजा अब ठीक रास्ते पर आ गया है। राजा की सेवा से साधू बहुत प्रसन्न हुआ और उसने उसके कार्यों और भक्ति भावना से प्रसन्न होकर कहा कि 'हे राजन।' अब तुम ठीक रास्ते पर चल रहे हो और हमेशा इसी प्रकार से अच्छे कार्य करना सदा भगवान को याद रखना और कभी भी अपने आपको दूसरों से उच्च न समझना तभी तुम सही अर्थों में राजा कहलाओगे। यदि तुम मेरे इन वचनों को मानने को तैयार हो तो मैं तुम्हें फिर से तुम्हारा राज्य वापिस उसी प्रकार हरा-भरा लौटा दूंगा। राजा ने सहर्ष ही उसकी बातों को स्वीकार कर लिया। तब

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साधु ने उससे कहा, 'आज से तीसरे दिन यहाँ से एक मील दूर जाना वहाँ तुम्हें एक घड़ा दिखाई देगा उसे तुम इस महल में लाकर फोड़ना। जब घडा टूटेगा तो उसमें से एक सफेद परी निकलेगी उससे तुम कहना कि 'ए नन्ही परी तू मेरा उजड़ा राज्य वापिस कर, देखना वह तम्हारी इच्छा को पूर्ण करेगी। इसके बाद साधू ने उससे एक और वरदान मांगने को कहा तो राजा ने कुछ देर सोचा तो उसे एक बच्चे की कमी महसूस हुई। उसने तुरन्त ही साधू से एक लड़के की इच्छा जाहिर की। साधू ने कहा, कि तेरी यह इच्छा भी पूर्ण होगी। परन्तु···।परन्तु के बाद साधु महाराज चुप हो गए। राजा ने बड़ी नम्रता से पूछा, 'महाराज, परन्तु के पश्चात् आप चुप क्यों हो गए? जल्दी बताइये, मेरा हृदय संशय से भर उठा है। परन्तु साधू आगे कुछ न बोला।

इतना कहकर कि आगे भाग्य बताएगा। साधू वहां से चला गया। लेकिन राजा के सामने एक प्रश्न चिन्ह छोड़ गया। राजा कुछ दिन तक इस प्रश्न पर उलझा रहा, कि न जाने ऐसी क्या बात है जो साधू महाराज ने उसे न बताई।

उस दिन के बाद तीसरे दिन राजा साधू महाराज की बताई विधि के अनुसार महल से एक मील दूर गया और सचमुच वहां उसको एक घड़ा दिखाई दिया। वह उस घड़े को महल में उठा लाया और महल में लाकर उसने घड़े को जोर से पटका, घड़ा फूट गया। घड़ा फूटते ही धुंआ-धुंआ होने लगा और कुछ मिनटों के बाद ही वहां एक सफेद सुन्दर-सी परी दिखाई दी। उसने सिर झुकाकर बड़ी नम्रता से राजन से पूछा—'हे राजन्! क्या आज्ञा है?'

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राजा पहले तो परी को देखता रह गया फिर उसे साधू की बात याद आ गई उसने झट से उससे कहा—'ऐ नन्ही परी तू मेरा उजड़ा राज्य वापिस कर दे। इतना कहना था परी ने सिर झुकाया और वहां से गायब हो गई।

दो-तीन घन्टे के बाद राजा ने जब खिड़की से बाहर झांका तो वह आश्चर्यचकित रह गया यह देखकर कि सारा राज्य फिर से पहले जैसा ही हो गया था लोग हंसते-बोलते चलते नजर आ रहे थे। बड़े-बड़े भवन और बाग आदि फिर पहले जैसे हो गये। राजा यह सब देखकर बहुत खुश हुआ और मन-ही-मन साधु को धन्यवाद दिया।

अब राजा फिर से वही खुशहाल हो गया। वह इस घटना से इतना प्रसन्न हुआ कि उसे साधु की वह बात भूल गई जिसने राजन को उलझन में डाल दिया था। वह अपनी सात रानियों के साथ आनन्द से दिन गुजारने लगा। वह अब प्रजा का पहले से भी अधिक ख्याल रखने लगा और साधु महाराज के दिये वचनों का भी पालन करता।

एक दिन राजा को खुशी का समाचार मिला। उन्हें सबसे छोटी रानी ने बताया कि वह गर्भवती है। यह सुनकर राजा की खुशी का ठिकाना न रहा। सारे महल में यह खबर फैल गई। सब लोग बहुत खुश हुए। परन्तु छहों रानियों को अब छोटी रानी से ईर्ष्या होने लगी। उन्हें यह डर सताने लगा कि अब उनकी कदर कम हो जाएगी।

दिन बीतते गए और इसी प्रकार नौ मास बीत गए। दसवें मास में छोटी रानी ने एक बहुत सुन्दर लड़के को जन्म दिया। राजा को जब खबर मिली तो राजा फूले न समाए। उन्होंने मन्त्रियों को आज्ञा दी कि आज महल में घी के दिए जलायें

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जायें ! सारे राज्य में गरीबों को भोजन खिलाया जाए !

सारे राज्य में भी लोगों ने खुशी मनाई। लोगों को ऐसा लग रहा था मानो उन्हें खजाना मिल गया हो। इसी प्रकार हंसी-खुशी से दिन बीतते गए। राजकुमार का नाम 'राहुल' रखा गया। राहुल दिन-दिन बढ़ने लगा। उसकी अठखेलियाँ सबका मन भा लेतीं।

बाहरवें साल में राजकुमार ने जैसे ही पदार्पण किया, वैसे ही उसमें कुछ परिवर्तन आने शुरू हुए। न जाने क्यों पहले दिन ही उसने एक रानी का सिंगारदान चोरी कर लिया और उसे महल के पीछे वाले बाग में गढ्ढा खोदकर छुपा दिया।

सारे महल में शोर मच गया कि मंझली रानी का सोने का सिंगारदान कहां गया ? पर किसी को राजकुमार पर शक न हुआ और होता भी क्यों ? वह तो राजकुमार था। उसे चोरी की क्या आवश्यकता होती।

बहुत खोज की गई परन्तु किसी को भी सिंगारदान न मिला। सबको बड़ा आश्चर्य भी हुआ। भरे महल में चोर कैसे आ सकता था और वह भी रानी के श्यन कक्ष में।

धीरे-धीरे यह बात सब भूल गए। फिर दूसरी रानी का नौलखा हार जिसमें हीरे-मोती जड़े थे, चोरी हो गया।

सब बड़े हैरान थे। रानी तो बहुत ही दुःखी हो गई ! लेकिन क्या किया जा सकता था ?

राजकुमार ने उस हार को भी उसी स्थान पर रख दिया, जहां पहले सोने का सिंगारदान रखा था।

बहुत खोज करने पर भी जब वह हार न मिला तो रानी को सब्र का घूंट पीना पड़ा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राजा को जब इस बात की खबर मिली तो राजा को बहुत क्रोध आया।

राजा ने मन्त्रियों को आज्ञा दी कि महल में कड़े पहरे लगा दिए जाएं ! ऐसा ही हुआ महल में कड़े पहरे लगा दिए गए। हरएक पर कड़ी नजर रखी जाती। जिस पर भी थोड़ा बहुत शक होता उसकी तालाशी ली जाती।

परन्तु राजकुमार पर किसी की भी नजर न थी। एक दिन फिर ऐसे ही चोरी हुई। अब की बार चौथी रानी के हाथों के कड़े जो रानी को उनके मायके से मिले थे। ये कड़े उनके पुरखों की निशानी थी। ये कड़े बहुमूल्य थे, इसके जोड़ के कड़े कहीं न थे। कड़ों की बनावट भी अति सुन्दर थी। रानी बड़े चाव से किसी विशेष त्यौहार में ही उन्हें पहना करती थी।

कड़ों की चोरी के बाद रानी का बुरा हाल था। रानी के कमरे में राजकुमार राहुल के सिवा कोई आया भी न था। रानी को राहुल पर शक हो गया परन्तु उसने राजकुमार को कड़े ले जाते न देखा था इसलिए वह किसी को कह भी न सकती थी।

सब रानियां जब नहा रही थीं तो चौथी रानी ने अपना दुख:सब रानियों को सुनाया। उस दिन राहुल की माता नहाने न आई थी। उस रानी को अब मौका मिला और उसने सब रानियों को अपनी शक की बात भी बताई। सब हैरान होकर उसका मुँह देखने लगीं !

अब सब रानियां सर्तक हो गईं और हमेशा टोह में रहतीं कि कब राजकुमार उनके कमरे में आए और कब वे उसे चोरी करते हुए पकड़ें।

एक दिन राहुल पांचवीं रानी के कमरे में आया और खेलने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लगा। रानी तो पहले से ही सतर्क थी और बड़ी बेसब्री से उस घड़ी का इन्तजार कर रही थी जब वह चोरी करते हुए राजकुमार को पकड़ती।

ऐसा ही हुआ जैसा कि रानी चाहती थी। राजकुमार ने खेलखे-खेलते रानी के कमरे से सोने की मूर्ति उठाई और बाहर की ओर जाने लगा। यह मूर्ति राजा ने रानी को कभी खुश होकर भेंट में दी थी इसलिए यह मूर्ति रानी के लिए बड़ा महत्व रखती थी। सतर्क होने के कारण रानी ने शीघ्र ही उसे पकड़ लिया और शोर मचा दिया।

सारे लोग वहां एकत्र हो गए। जब सबने राजकुमार को चोर के रुप में देखा तो सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। छहों रानियां खुशी से फूली न समाईं।

राजा को जब इस बात की खबर मिली तो राजा को बहुत दुखः हुआ। राहुल की माता को भी बहुत दुखः हुआ। परन्तु अब हो ही क्या सकता था।

यह खबर हवा की तरह सारे राज्य में फैल गई और सबने इस विषय में राजा से न्याय करने को कहा और राजकुमार के विरुद्ध सबका मत था।

कई लोगों का कहना था जब राजकुमार जैसे लोग चोर होंगे तो जनता पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा। इसमें देश की बदनामी है।

राजा को मजबूर होकर राजकुमार को देश निकाला देना पड़ा।

जब राजकुमार को महल से निकाला जा रहा था तो राजकुमार राहुल की माता से न सहा गया और वह भी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राजकुमार के साथ जाने के लिए तैयार हो गईं। राजा का तो दुःख से बहुत बुरा हाल था। परन्तु छहों रानियां मन-ही-मन बहुत खुश थीं अब उन्हें अपने अपमान का बदला मिल रहा था।

राजकुमार राहुल की और उसकी माता को शाही पोशाक ले ली गई और साधारण वस्त्र उन्हें दिए गए। उन्हें देश से बाहर कर दिया गया।

वे दोनों चलते रहे-चलते रहे और इसी प्रकार दो तीन दिन बीत गए। जो उनके पास थोड़ा बहुत खाना था वह भी खत्म हो गया था। वे एक अनजाने देश में थे इसलिए किसी से खाना भी न मांग सकते थे।

भूखे पेट कितनी दूर जाते जब वे लोग एक खेत के पास पहुंचे, तो रानी ठोकर खाकर गिर पड़ी और बेहोश हो गई। राहुल को पता था कि उन्होंने दो दिन से कुछ न खाया था। अब वह अनजान जगह में खाना मांगता भी कैसे और फिर वह वहां के लोगों का स्वभाव भी तो न जानता था। कहां वह राजसी-ठाठ में रहते थे और कहां आज धूल में पड़े थे। न पांवों में जूते थे न पेट में भोजन का एक दाना था। कैसी दुर्दशा हो गई थी, कोई देखकर यह न जान सकता था कि ये राजकुमार और रानी है।

राहुल जानता था कि उसी के कारण आज उसकी माता का ये हाल है। वह मन में बहुत दुखी था परन्तु क्या कर सकता था, वह जानबूझकर चोरी न करता था। उसे न चाहते हुए भी एक अदृश्य शक्ति चोरी के लिए प्रेरित करती थी और उसके हाथ काम करने लगते थे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राहुल उठा और पानी की तालाश करने लगा थोड़ी दूर चलने पर उसको एक कुआँ दिखाई दिया परन्तु उसके पास पानी लाने के लिए कोई पात्र ही न था।

उसके दिमाग ने साथ दिया और खेतों में पानी डालने वाली बाल्टी पर उसकी नजर पड़ी, उसने झट उसमें पानी भरा और उसी ओर चल पड़ा जहां उसकी मां बेहोश पड़ी थी।

उसने पानी के छींटे अपनी माता पर डाले। थोड़ी देर में ही उनको होश आ गया। थोड़ा पानी अपनी माता को पिलाया और स्वयं भी पिया। फिर बाल्टी को वहीं रख दोनों एक पेड़ की छाया में आ गए। परन्तु अब भूख सताने लगी। राहुल अपनी माता को वहीं छोड़ खाने की खोज पर चल पड़ा उसे अधिक दूर न जाना पड़ा। उसने खेतों में पके हुए खरबूजों को देखा और उसके हाथों ने काम करना शुरू कर दिया। उसने दो अच्छे-अच्छे पके हुए खरबूजे चुने और तोड़कर उस वृक्ष की ओर चल पड़ा जहां उसकी माता बैठी थी।

दोनों ने पेट भरकर तरबूज खाया और थोड़ी देर पेड़ की छाया में लेट गए। थके होने के कारण शीघ्र ही उन दोनों को नींद आ गई। वे दोनों इतनी गहरी नींद में सोये थे कि उन्हें समय का भी ध्यान न रहा।

सुबह-सुबह जब उनकी नींद टूटी तो उनकी थकान दूर हो चुकी थी। फिर उन्होंने अपनी यात्रा आरम्भ कर दी। चलते-चलते वे एक गांव से दूसरे गांव पहुंचे। शाम हो चली थी। चारों ओर अन्धेरा-सा छाने लगा था। गांव में आबादी बहुत कम थी। बहुत दूर-दूर कोई-कोई झोंपड़ी दिखाई न देती थी।

राहुल और उसकी मां को रात बिताने के लिए स्थान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चाहिए था। लेकिन उनकी यह समस्या थी कि वे वहां-कौन सी झोंपड़ी का द्वार खटखटाये। आखिर उन्हें थोड़ी दूर एक झोंपड़ी में रोशनी दिखाई दी और वे दोनों उसी ओर चल पड़े।

खट-खट-खट द्वार पर दस्तक हुई और साथ ही दरवाजा खुला। उन्होंने देखा एक बुढ़िया हाथ में लालटेन लिए खड़ी थी। एक क्षण देखने के पश्चात् बुढ़िया ने आश्चर्यचकित स्वर में पूछा—'तुम लोग कौन हो और कहां से आए हो ?'

पहले तो वे दोनों कुछ हिचकिचाए परन्तु दूसरे ही क्षण राहुल की माता ने कुछ हिम्मत करके बड़े नम्र स्वर में उत्तर दिया—'माताजी ! हम परदेशी हैं और कई दिनों से भटक रहे हैं ! क्या आप हमें एक रात के लिए अपने यहां स्थान देंगीं ? कल सुबह होते ही हम यहां से चले जायेंगे।'

बुढ़िया का मन उनकी दुर्दशा और रानी की मधुर आवाज को देख-सुनकर एकदम पिघल गया। बुढ़िया उनके चेहरों को देखकर पहचान गई कि वे लोग जरूर किसी अच्छे खान-दान के हैं।

बुढ़िया शीघ्र उन्हें झोंपड़ी के भीतर ले गई। वहां पर बुढ़िया के अलावा और कोई न था। झोंपड़ो के भीतर एक टूटी-फूटी खाट पड़ी थी और एक कोने में एक बहुत पुराना-सा टूटा जंग लगा बक्सा पड़ा था।

एक तरफ कुछ बर्तन पड़े थे। एक थाली में दो रोटियां पड़ी थीं। बुढ़िया ने जल्दी-जल्दी एक फटीं-सी चटाई बिछाई और बैठने को कहा। बुढ़िया की आवाज अब ममता से भरी थी। उसके चेहरे को देखने से पता लगता था कि वह बहुत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रसन्न है।

बुढ़िया ने तुरन्त उन दो रोटियों को थाली में परोसकर उनके सामने रख दिया और बड़े प्यार भरे शब्दों में बोली—'बेटी, खाओ ! तुम्हारे चेहरे से पता चलता है कि तुम दोनों ने सुबह से कुछ नहीं खाया। मेरे पास तो यही दो रोटियां हैं और कुछ भी नहीं। कहते-कहते उसकी आंखों में आंसू आ गए।

राहुल और उसकी माता से बुढ़िया के आंसू न देखे गए। उन्होंने तुरन्त बुढ़िया से बड़े प्यार भरे स्वर में कहा।

'कोई बात नहीं माताजी ! हमारे लिए तो आपकी यह प्यार से भरकर दी गई दो रोटियां ही बहुत कुछ हैं।' फिर कुछ देर रुककर एकदम से रानी बोली—'लेकिन माताजी आपने भी तो कुछ नहीं खाया। आपने तो अपने लिए कुछ भी न रखा, दोनों रोटियां ही हमें दे दीं।'

बुढ़िया कछ छुपाते हुए बोली—'बेटी मेरा पेट तो भरा हुआ है।'

लेकिन उसके चेहरे से स्पष्ट दिखाई दे रहा था कि उसने कुछ भी नहीं खाया। रानी तुरन्त भांप गई कि दो रोटियाँ होने के कारण, लज्जावश बुढ़िया झूठ बोल रही है। लेकिन वे दोनों बूढ़िया को भूखा रख किस प्रकार अपना पेट भर सकते थे। रानी समझदार थी। उसने बुढ़िया से बड़े मधुर स्वर में कहा :

'आप भी हमारे साथ खाईए न माताजी ! फिर कुछ हठ करती हुई बोली, 'देखिए ! नहीं तो फिर हम भी नहीं खायेंगे।'

बुढ़िया उनकी बात को न टाल सकी। तीनों ने मिलकर उन दो रोटियों को खाया। परन्तु आश्चर्य की बात यह थी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कि उन तीनों को ऐसा लगा मानों उनका पेट एकदम पूरी तरह भर गया हो, और खाने की इच्छा किसी को भी न थी।

तीनों खाना खाकर नीचे ही फर्श पर लेट गए। राहुल और उसकी माता के मन में बुढ़िया के प्रति इतनी श्रद्धा जाग्रत हो गई थी मानों स्वयं भगवान बुढ़िया के रूप में उनके पास हों। और मन-ही-मन वे दोनों बुढ़िया को धन्यवाद दे रहे थे। बुढ़िया को भी ऐसा लग रहा था जैसे इस धरती पर उसका भी कोई है। बुढ़िया के मन में उनसे कुछ पूछने की इच्छा थी परन्तु यह सोचकर कि वे थके होंगे चुप ही रही।

बहुत थके होने के कारण तीनों को शीघ्र ही नींद आ गई। सुबह जब उनकी आंखें खुलीं तो तीनों अपने आपको स्वस्थ और निश्चिन्त से पा रहे थे। तीनों ही एक-दूसरे को निश्चिन्त पाकर बहुत खुश थे। उन्हें ऐसा लग रहा था जैसे वे आपस में चिर-परिचित हों।

बुढ़िया दूसरों के खेतों की रखवाली करती थी और कभी पत्थर तोड़ती थी और जो कुछ उसके बदले में मिलता था। उसी से वह अपना जीवन निर्वाह करती थी। सुबह उठकर वह फिर हर रोज की तरह से काम की तलाश में जाने लगी। राहुल ने बुढ़िया को जाते देखा तो पूछा—

'बड़ी अम्मा कहां जा रही हो ?' पहले तो बुढ़िया बताने में कि वह काम में जा रही है हिचकिचाई परन्तु और कोई उपाय न पाकर उसे सच बताना ही पड़ा। बुढ़िया कांपती-सी आवाज में बोली—

'बेटा काम की तलाश में जा रही हूं। मेरा तो और कोई नहीं इसलिए मैं अपना जीवन निर्वाह अपने आप काम करके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ही चलाती हूं।'

राहुल ने तो कभी मेहनत करके कमाने के बारे में सोचा भी न था। और सोचता भी कैसे उसे पहले कभी कमाने की जरूरत भी न होती थी। उसे तो सब कुछ बड़े आराम से मिल जाता था। जब उसने बुढ़िया की बात सुनी तो उसका सिर शर्म से झुक गया, और उसने सिर झुकाए ही बुढ़िया को कहा

'नहीं बड़ी अम्मा! ऐसा कैसे हो सकता है कि तुम इस उम्र में कमाने जाओ और हम घर में बैठकर आराम करें। यह तो हमारे लिए बड़ी शर्म की बात है। आप यहीं रहें माताजी के साथ। मैं काम की तलाश में जाता हूं।'

यह सुनकर बुढ़िया की आंखों में आंसू आ गए। उसे ऐसा लगा मानों वह उसका अपना बेटा हो। क्योंकि बहुत साल पहले उसका भी एक बेटा था और वह भी इसी प्रकार की बातें किया करता था। वही कमाकर लाता था और दोनों मां-बेटा अपनी गुजर-बसर आराम से करते थे। परन्तु एक दिन जंगल में पेड़ काटते समय वह पेड़ के नीचे आ गया और मां का एक मात्र सहारा उसी समय भगवान को प्यारा हो गया। तब से ही बुढ़िया अकेली रह गई थी। अपना पेट भरने के लिए उसे इस उम्र में काम करना पड़ता था। परन्तु आज ... आज उसे ऐसा लग रहा था मानों फिर से उसका बेटा लौट आया हो। जब तक वह इन बातों में खोई थी राहुल जा चुका था। जब वह होश में आई तो राहुल को न पाकर उसे कुछ हिचकिचाहट-सी महसूस हुई।

राहुल काफी देर तक काम की तलाश में ठोकर खाता रहा परन्तु आखिर में एक स्थान पर पहुंचा जहां एक मूर्तिकार मूर्ति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बना रहा था। राहुल ने मूर्तिकार से काम के बारे में पूछा। मूर्तिकार को एक व्यक्ति की आवश्यकता भी थी। उसने राहुल को अपने यहां रख लिया। दिन भर उससे बड़ा दबाकर काम लिया, परन्तु मजदूरी बहुत कम दी, जिससे तीनों का पेट भी न भर सकता था। राहुल को कम मजदूरी मिलने से बहुत दुःख हुआ परन्तु अब कर भी कुछ न सकता था। वह सोचने लगा कि इतने थोड़े पैसों में तीनों के पेट कैसे भरेगा। वह काफी देर तक इन्हीं विचारों में डुबा रहा। लेकिन जब उसकी तंद्रा टूटी तो उसकी नजर एक बहुत सुन्दर मूर्ति पर पड़ी। उसने जब मूर्तिकार को अपने काम में व्यस्त देखा तो एकदम से उसका शरीर एक बार तो कांपा परन्तु दूसरे ही क्षण उसके हाथों ने चलना शुरू किया और उसने वह मूर्ति उठाई और शहर की ओर चल पड़ा।

दो-तीन घन्टे में ही वह शहर पहुंच गया और एक दुकान में मूर्ति को बेच दिया। उस मूर्ति के बदले उसे काफी पैसे मिले। उसने अपनी माता और बुढ़िया के लिए कुछ कपड़े लिए और खाने-पीने का सामान लिया और घर की राह ली।

जब वह घर पहुंचा तो अंधेरा चारों ओर अपनी चादर बिछा चुका था। उसकी माता और बुढ़िया दोनों चिन्तामग्न बैठे हुए थे। राहुल को देखते ही दोनों के चेहरे खिल उठे। दोनों राहुल की ओर लपकीं रानी ने तो राहुल को हृदय से लगा लिया। राहुल ने अवसर पाकर दोनों के चरणों में उनके लिये लाए कपड़ों को रख दिया। दोनों कपड़ों को देखकर फूली नहीं समाईं। उन्हें कुछ आश्चर्य भी हुआ। रानी ने आश्चर्यचकित स्वर में पूछा—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'बेटा इतना सब कहां से लाया है ?' राहुल पहले तो बात सुनकर मुस्कराता रहा फिर बोला, 'माता जी ये सब मेहनत की माया है।' फिर उसने सारी बात सच-सच सुना दी।'

बुढ़िया तो सुनकर बोली, 'बेटा तूने बिल्कुल ठीक किया। जब कोई मेहनत की कद्र न करे तो जबरदस्ती उससे अपना हक ले लेना चाहिए।'

परन्तु रानी को बड़ा दुख हुआ। उसे अपनी बीती बात याद आने लगी। माँ को आंखों में आंसू देखे तो उसने अपनी मां से मांफी मांगी और अपनी मां को मनाने लगा। आखिर उसने अपनी प्यार भरी बातों से मां को मना ही लिया। तीनों हंसने लने और तीनों ने भोजन किया और आराम से फर्श पर लेट गए। बातें करते-करते न जाने कब उन तीनों की आंख लग गई। उन्हें कुछ पता ही न चला।

इसी प्रकार हंसते-बोलते काफी महीने बीत गए। एक दिन राहुल को कहीं काम न मिला तो उसने जंगल में जाकर लकड़ी काटने की सोची ताकि वह उसको शहर में बेच कर कुछ कमा सके।

वह जंगल की ओर चल पड़ा। परन्तु अभी वह रास्ते में ही था कि जोर-जोर से बादल गरजने लगे, और बारिश शुरू हो गई। लेकिन बारिश उसका रास्ता न रोक सकी। राहुल अपने पथ पर चलता ही रहा चलता ही रहा। आखिर वह जंगल में पहुंच गया। अब वह कुछ निश्चिन्त-सा हुआ और एक भारी पेड़ के नीचे जाकर खड़ा हो गया। कुछ देर तक वहां खड़ा रहा। जब बारिश कुछ कम हुई तो वह उस पेड़ के नीचे से निकला और पेड़ों को देखने लगा कि वह कौन-सा पेड़ काटे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुर्भाग्यवश आज पहली बार लकड़ी काटने आया था और आज ही बारिश हो गई। सब पेड़ गीले थे। वह पेड़ों को देखता-देखता आगे की ओर बढ़ने लगा। परन्तु उसे सूखा पेड़ न दिखाई दिया। वह आगे बढ़ता गया और उसे यह ध्यान न रहा कि वह घने जंगल में घुसता जा रहा है। वह बहुत दूर तक जंगल में घुसता चला गया और जब उसे एक पेड़ भी काटने लायक न मिला तो वह झुंझला-सा गया। तभी उसे एकदम से ध्यान आया कि वह बहुत आगे निकल आया है।

वह इतने घने जंगल में पहुंच गया था कि उसे फिर लौटने की राह न मिल सकी। वह भटकते-भटकते बहुत घने जंगल में पहुंच गया। अब वह बहुत थक गया था। वह वहीं एक पेड़ के नीचे बैठ गया। अभी वह पेड़ के नीचे बैठा ही था कि उसे एक भारी आवाज सुनाई दी—'अभी बैठने का समय नहीं आया आगे बढ़ा ?'

राहुल आवाज सुनते ही एकदम खड़ा हो गया और इधर-उधर देखने लगा। लेकिन उसे कोई न दिखाई दिया। वह पहले तो बहुत डर गया। परन्तु फिर उसे वही आवाज सुनाई दी।

'डरो नहीं बेटा ! आगे बढ़ो, तुम्हें किसी प्रकार का डर नहीं। मैं तुम्हारे साथ हूं।' यह सुनकर राहुल को कुछ हिम्मत बंधी। परन्तु किसी को न पाकर आश्चर्य भी हुआ।

अब उसका भय जाता रहा और वह आगे की ओर बढ़ने लगा। उसे लगा मानों उसमें नई शक्ति का संचार हुआ हो वह तेजी से आगे की ओर बढ़ने लगा।

बड़ी भयानक-भयानक आवाजें सुनाई दे रही थीं परन्तु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राहुल को अब किसी प्रकार का भय न लग रहा था। वह आगे की ओर बिना किसी हिचकिचाहट के बढ़ता जा रहा था। उसके पैर बड़ी तेजी से उठते जा रहे थे। शीघ्र ही वह ऐसे स्थान पर पहुंच गया, जहां का दृश्य बड़ा ही मनोरम था।

चारों ओर हरी-हरी घास की चादर बिछी थी पक्षी चहचहा रहे थे। ऊंचे-ऊंचे पहाड़ चारों ओर ऐसे खड़े थे मानों धरती मां ने मुकुट पहन रखा हो। पहाड़ से बहते हुए झरने का स्वर इतना मधुर था, कि कोई भी साधारण व्यक्ति का मन वहां ठहरने को करता। राहुल ने जब प्रकृति के इस सौंदर्य को देखा तो वह भी मुग्ध-सा हो गया। वह वहीं झरने के किनारे बैठकर सुन्दर दृश्य को निहारने लगा।

चारों ओर देखते-देखते उसकी नजर एक पेड़ पर जा टिकी उस पेड़ पर बड़े-बड़े लाल फल लटक रहे थे। जिन्हें देखते ही राहुल को भूख लगने लगी और मुंह में पानी भर आया। वह जल्दी से उठा और उस पेड़ की ओर बढ़ने लगा। वह पेड़ के पास पहुंचा। फल भारी होने के कारण नीचे की ओर आ गए थे। राहुल ने एड़ियों पर खड़े होकर हाथ बढ़ाया उसका हाथ फल तक पहुंच गया उसने एक फल तोड़ लिया।

जैसे ही उसने खाने के लिए काटा तो उसे अपनी मां की याद आ गई। वह सोचने लगा मुझे घर से निकले न जाने कितने घन्टे हो गए। अवश्य माताजी चिन्ता कर रही होंगीं उसने फल वहीं रखा और स्वयं खड़ा हो गया। जैसे ही वह खड़ा हुआ, तभी फिर आवाज आई।

'बेटा तुम चिन्ता न करो उनकी। मैं उनका ख्याल रखुंगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुम्हें अभी बहुत से काम करने हैं। वे ऐसे काम हैं जिन्हें सिर्फ तुम ही कर सकते हो ! तुम्हारी माता उस बुढ़िया को सब कुछ समय पर मिल जाया करेगा और किसी प्रकार की कोई तकलीफ न होगी।'

राहुल सोचने लगा यह कौन है जो उसे इतनी अच्छी तरह से पहचानता है और नजर नहीं आता। अभी वह यह सोच ही रहा था कि तभी उसे जोर से हंसने की आवाज सुनाई दी।

'हा-हा-हा ? तुम क्या सोच रहे हो मैं जानता हूं। तुम यही सोच रहे हो न कि मैं कौन हूं, नजर क्यों नहीं आता ?' इतना कहने के पश्चात् फिर आवाज बन्द हो गई। थोड़ी देर फिर आवाज आई।

'तुम्हारा सोचना ठीक है। ठहरो मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर देता हूं।' इतना कहकर उस आवाज ने अपनी कहानी बतानी शुरू की।

'मैं आज से अठारह वर्ष पहले तुम्हारे देश में गया था। तुम्हारे देश का नाम नवल देश है। क्यों ठीक है न ?'

राहुल के मुँह से निकला 'हां !' इतना कहकर राहुल चुप हो गया।

फिर आवाज ने बताना शुरू किया कि आज तुम भी अठारह साल के हो। तुम्हें अपने देश से निकले पांच-छः साल हुए हैं। फिर आवाज़ ने बताया कि वह एक साधु है। फिर उसने अपनी वह सारी कहानी सुना दी। जो राहुल के पिता के जमाने में उस साधु के साथ घटी थी।

राहुल को कहानी सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। वह आश्चर्य से शून्य की ओर निहार रहा था। उसे सब कुछ बड़ा अजीब

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लग रहा था।

फिर उसने कुछ हिम्मत करके पूछा—'लेकिन साधु महाराज आप अब कहां है ? मुझे दिखाई क्यों नहीं देते ?'

उत्तर में फिर आवाज आई—

'बेटा ! मेरा शरीर तो यहां से सात पहाड़ों के पार पड़ा है। मैं तो आत्मा हूं और हमेशा तेरा ख्याल रखता हूं क्योंकि मुझे तेरी बहुत जरूरत है।' अभी उसने इतना ही कहा था, फिर उसे जैसे कुछ याद आ गया। उसने बात को वहीं खत्म की और राहुल को कहा—

'बेटा तुमने तो अभी तक कुछ भी नहीं खाया। लो उठाओ फल और खाकर देखो कितने स्वादिष्ट फल हैं। ऐसे फल तुमने कभी न खाए होंगे।'

यह बात सुनकर राहुल बैठ गया और फल उठाकर खाने लगा। सचमुच उसने पहले कभी इतना स्वादिष्ट फल न खाया था। एक फल से ही उसका पेट भर गया। अब रात हो चुकी थी वह वहीं एक साफ स्थान चुनकर हरी-हरी घास पर लेट गया।

आधी रात का समय था राहुल सोया हुआ था। एक सांप रगता-रेंगता वहां आया और राहुल के पांवों के पास जाकर अभी डसने ही वाला था कि एक साया वहां आया और सांप को फन से पकड़ा और जोर-जोर से धरती पर पटका। दो-तीन बार में ही सांप मर गया। साये ने उस मरे हुए सांप को बहुत दूर उछाल दिया।

सुबह पक्षियों के चहचहाने से राहुल की आंख खुली। वह शौचि आदि गया और फिर टहलता हुआ झरने के किनारे गया और स्नान करने के लिए झरने में उतर गया। झरने का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पानी ठंडा था और बड़ा साफ पानी था। स्नान आदि से निवृत होकर उसने कुछ फल आदि खाए और एक स्थान पर बैठ गया। कुछ क्षणों के बाद ही उसे फिर वही आवाज़ सुनाई दी—

'बेटे ! अब शायद तुम बिलकुल स्वस्थ हो। अब तुम्हें यहां से चलना चाहिए। तुम यहां दांयीं ओर को मुड़ो और सीधे चलते जाओ। आधी मील दूर तुम्हें एक चट्टान नजर आएगी। उस चट्टान के पास जाकर उस चट्टान से कहना 'हे चट्टान देवता हट जाओ।' इसी प्रकार तुम तीन बार कहना। वह चट्टान हट जाएगी और वहां रास्ता बन जाएगा। तुम वहां से नीचे को उतर जाना। किन्तु एक बात याद रखना तुम्हें रास्ते में अनेक लुभाने वाली चीजें मिलेंगी लेकिन तुम्हें किसी में नहीं उलझना है और सीधे-सीधे चलते जाना है।'

इतना कहकर वह कुछ देर रुका और फिर कहना आरम्भ किया—'चलते-चलते तुम एक ऐसे स्थान पर पहुंचोगे जहां तुम देखोगे चारों ओर पानी है और बीच में एक महल-सा दिखाई देगा। तुम्हें उस तक पहुंचना होगा। उस महल में अनेक कमरे होंगे। परन्तु तुम्हें वहां कोई न दिखाई देगा। लेकिन तुम यह न समझना कि वहां कोई नहीं। वहां एक तांत्रिक की अदृश्य शक्ति हर समय काम करती है और वह तुम्हारे को कई प्रकार से नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेगी। तुम्हें हिम्मत से काम लेना पड़ेगा।

आगे उसने यह बताया कि 'उस महल के मध्य एक कमरा है। उस कमरे के बिलकुल बीच में एक चांदी का कलश है उसमें अमृत जल है। वह जल एक बूंद भी जिसके मुंह में जाए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वह अजर-अमर हो जाए। यदि उस जल को निष्प्राण शरीर पर भी छिड़को तो वह फिर से जीवित हो जाए।'

राहुल ने पहले कभी ऐसी बातें न सुनी थीं। साधु से यह सुनके कि उसी जल से उसके हाथ भी ठीक हो सकते हैं। फिर कभी वह चोरी न करेगा। उसके मन में उस कलश को पाने की इच्छा और भी तीव्र हो गई।

उसने सब बातें बड़े ध्यान से सुनी थीं। वह जाने को तैयार हो गया। अभी वह दो कदम ही आगे बढ़ा था तो उसे फिर आवाज सुनाई दी।

'ठहरो बेटा वह देखो उस ओर वह उधर तलवार और रस्सी जो जमीन पर पड़ी है उठा लो यह तलवार जब तुम हाथ में लेकर चलाओगे तो यह हवा के समान चलने लगेगी जहां भी यह तलवार लगेगी उसके दो टुकड़े हो जायेंगे।'

यह रस्सी भी तुम्हारे बहुत काम आएगी। यदि किसी को बांधना चाहोगे तो इस रस्सी से कहना 'चल मेरी रस्सी दिखा कमाल।' फिर देखना इसका कमाल।

राहुल उन दोनों वस्तुओं को लेकर चल पड़ा। आधे मील चलने के पश्चात् सचमुच ही उसे एक चट्टान-सी दिखाई दी। उसे साधु की बात याद थी। उसने उसी प्रकार चट्टान को तीन बार कहा—

'हे चट्टान देवता, हट जाओ! हे चट्टान देवता, हट जाओ! हे चट्टान देवता, हट जाओ!' अभी उसने कहा ही था कि चट्टान देवता धीरे-धीरे एक तरफ को खिसकने लगा। जब चट्टान पूरी तरह एक तरफ को हट गयी तो वहां एक बहुत बड़ा सा मार्ग बन गया। राहुल ने जब नीचे झांका तो उसने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देखा वहां सीढ़ियां थीं।

वह उन्हीं सीढ़ियों से नीचे उतरने लगा। तीन-चार मोड़ खाने के बाद सीढ़ियाँ खत्म हो गईं। अब जमीन समतल थी। राहुल समतल जमीन पर आराम से चलने लगा। वहां पर ऐसा प्रकाश था मानों दिन हो। उसे सब कुछ भली प्रकार दिखाई दे रहा था। राहुल को चलने में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं हो रहीं थी।

राहुल बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा था अचानक उसकी आंखें चुंधिया गईं। उसने देखा कि वह एक बागनुमा स्थान में पहुंच गया है। चारों ओर पेड़ लगे थे। बाग में रंग-बिरंगे फूल खिले थे। एक लाइन में फुव्वारें लगे थे। जमीन पर हरी-हरी एक समान घास बिछी थी। कुल मिलाकर बाग बड़ा मनमोहक था। परन्तु राहुल को एक चीज देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि साधारण पेड़ों पर लगने वाले फल सोने के थे। वह रोशनी में सूर्य के समान चमक रहे थे।

राहुल का मन उन्हें देखकर बड़ा आकर्षित हुआ। उसके हाथों में बेचैनी-सी होने लगी। उससे न रहा गया और वह एक पेड़ की ओर बढ़ा। वह पेड़ के ऊपर चढ़ गया। जसे ही उसने फल तोड़ने के लिए हाथ बढ़ाया तो उसको एक झटका सा लगा वह नीचे आकर गिरा। उसे अधिक चोट तो न लगी परन्तु एकदम से उसे साधु की बात याद आ गई। अब वह अपने आप में लज्जा अनुभव कर रहा था।

वह शीघ्रता से उठा और आगे की ओर बढ़ा। अब वह बिना किसी ओर देखे आगे बढ़ने लगा। चलते-चलते उसे प्यास लगने लगी। उसने चारों ओर देखा कहीं पानी का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नामोनिशान न था। वह फिर चलने लगा। काफी चलने के बाद उसे एक सरोवर दिखाई दिया। राहुल को प्यास तो लग ही रही थी। वह उस सरोवर की ओर ही चल पड़ा। सरोवर के पास पहुंच उसने देखा तो सरोवर का पानी बिलकुल साफ था। पानी देखकर उसकी प्यास और बढ़ गई उसने दोनों हाथों में पानी लिया और हाथों को मुंह की ओर ला ही रहा था कि उसकी नजर पानी पर पड़ी और एकाएक भयभीत हो उठा। उसके हाथों में पानी न था। पानी के स्थान पर खून था। उसने जल्दी से पानी फेंक दिया।

पानी फेंककर राहुल खड़ा हो गया तभी साधू की आवाज़ उसके कानों में पड़ी।

'बेटा ! मैंने तुम्हें पहले ही सावधान किया था कि रास्ते की किसी आकर्षित चीज में न उलझना। लेकिन तुम भल गए इसलिए ही मुझे तुम्हारी आंखों को ऐसा करना पड़ा ताकि तुम पानी के स्थान में खून देखकर पानी न पियो। यह पानी तुम्हारे लिए खतरनाक है। इस पानी को पीने से तुम वहीं ठोस बन जाते।'

राहुल समझ गया कि इस राह में दिखने वाली सब वस्तुयें मायावी हैं और उसके मार्ग में बाधा डालने के लिए बनाई गई हैं। अब उसने मन-ही-मन प्रण किया कि अब किसी भी वस्तु को हाथ न लगाएगा। वह यह सोचकर आगे बढ़ा साधू की आवाज आई—

'ठहरो बेटा ! तुम्हें प्यास लगी है न तो यह लो लोटा और अपनी प्यास बुझाओ।' राहुल ने देखा एक लोटा सामने हवा में उड़ता हुआ-सा आया और उसके पास जाकर हवा में ही

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ठहर गया।

राहुल ने हाथ बढ़ाया और लोटा ले लिया उसने अपनी प्यास बुझाई और लोटा यूंहि हवा में छोड़ दिया लोटा हवा में चलता हुआ गायब हो गया। अब राहुल के प्राण में प्राण आए उसके कदम तेजी से उठने लगे।

अन्धेरा धीरे-धीरे छाने लगा था। राहुल बहुत थक भी चुका था। उसे रात गुजारने के लिए स्थान चाहिए था। लेकिन उसे कोई ऐसा स्थान न दिखाई दिया जहां वह ठहर सके वह और आगे गया।

आगे चलकर उसे बहुत दूर एक लौ-सी दिखाई दी। जो शायद किसी दीये की लौ थी। अब काफी रात हो चुकी थी। वह उसी रोशनी के सहारे आगे बढ़ने लगा।

आखिर राहुल उस स्थान में पहुंच गया जहां रोशनी हो रही थी। उसने देखा एक टूटी-फूटी झोंपड़ी है। जिसके भीतर एक दिया जल रहा है। झोंपड़ी स्थान-स्थान से टूटी हुई थी इसलिए वह दिया बाहर से दिखाई दे रहा था। अभी वह वहां खड़ा यह सोच ही रहा था कि अन्दर जाए कि न जाए, कि उसे कराहने की आवाज सुनाई दी।

राहुल ने जब दरवाजे की ओर देखा तो उसने देखा वह भिड़ा-सा हुआ था। उसने हिम्मत की और अन्दर झांककर देखा। अन्दर एक बहुत ही बुढ़िया, अधमरी सी बिस्तर पर पड़ी थी। झोंपड़ी में और कोई न था। बुढ़िया कराहते हुए कह रही थी—

'प···आ···आ···नी।' राहुल को उस बुढ़िया पर बड़ा तरस आया। तुरन्त झोंपड़ी में घुसा। उसने देखा, एक कोने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

में एक घड़ा रखा था। राहुल ने इधर-उधर देखा परन्तु उसे कोई बर्तन नजर न आया। वह बाहर आया और उसने एक पत्ता उठाया। यह पत्ता शायद किसी जंगली पेड़ का था। पत्ता काफी बड़ा था। उसने जल्दी से पत्ते का दौना बनाया और उससे बुढ़िया को पानी पिलाया।

पानी पीने के पश्चात् बुढ़िया को कुछ शांति मिली। वह आराम से सो गई। अब राहुल ने चैन की सांस ली और सोचने लगा चलो अब मैं यहीं पड़कर सो जाऊंगा।

राहुल को भूख लग रही थी क्योंकि उसने सुबह ही वह फल खाया था। उसके बाद उसने सारा दिन कुछ न खाया था। उसने अपनी कमर में बन्धे कपड़े की गांठ को खोला, उसमें से वैसा ही फल निकला जो उसने सुबह खाया था। उसने बुद्धिमानी से चलते समय फल कमर में बांध लिया था ताकि भूख लगने पर खा सके।

उसने फल निकाला और आराम से बैठकर खाने लगा। फल तो स्वदिष्ट था ही, एक फल से ही पेट भर गया। अब आराम से वहीं जमीन पर लेट गया। दिनभर का थका हुआ तो वह था ही, उसे शीघ्र ही नींद आ गई। वह गहरी नींद में खो गया। उसे किसी बात की खबर न रही।

आधी रात को खर्र···र···र···खर्र···र···र···र की आवाज आने लगी। अचानक ही आवाज सुनकर राहुल की नींद टूटी उसने न जाने क्या सोचा और खाट की ओर मुड़कर देखा। लेकिन देखते ही उसके होशों-हवास गुम हो गए। उसने देखा खाट खाली पड़ी थी।

राहुल सोचने लगा बुढ़िया तो अधमरी सी थी और फिर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इतनी बूढ़ी थी कि उसका चलना तो नामुमकिन था फिर वह कहां गायब हो गई। यह सोचकर राहुल एकदम घबरा सा गया। वह तेजी से उठा और बाहर आ गया। उसने बाहर चारों ओर घूम कर देखा। एक स्थान पर उसकी नजर पड़ते ही उसे तो जोर से गश ही आ गया। वह गिरते-गिरते बचा उसने तुरन्त अपने आपको सम्भाला और उस ओर बढ़ने लगा जिस ओर उसकी दृष्टि गई थी।

उस स्थान पर जाकर उसने देखा कि वह बुढ़िया धरती पर पड़ी थी। जैसे ही उसने हाथ लगाया बुढ़िया की लाश में तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ यह देखकर कि वह तो एक खाली बुढ़िया का नकाब मात्र था।

अचानक उसे किसी की खिलखिलाहट सुनाई दी। उसने जैसे ही पीछे मुड़कर देखा तो देखता ही रह गया। उसके पीछे एक बहुत सुन्दर लड़की खड़ी थी।

वह लड़की कोई पन्द्रह वर्ष की जवान लड़की थी। उसके लम्बे-लम्बे घने बाल खुले हुए कमर तक झूल रहे थे। बड़ी-बड़ी आंखें ऐसी लग रही थीं मानों समुन्द्र से चुनी हुई सुन्दर दो सीपियां हों। उसके गोरे तन पर गुलाबी कपड़े बहुत फब रहे थे। वह स्वर्ग की किसी अप्सरा से कम न लग रही थी।

वह लड़की राहुल को देखकर हंसती ही जा रही थी। राहुल के कानों में उसकी मधुर खिलखलाहट ऐसी लग रही थी जैसे पायल की झनकार हो। वह कुछ क्षण उस लड़की को एकटक घूरता रहा और लड़की हंसती रही। अचानक उसकी तन्द्रा भँग हुई और वह हड़बड़ा गया। उसने हिचकि-चाहट भरे स्वर में उस लड़की से पूछा—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'आ···प···कौ···न···हैं ?' इस प्रश्न को सुनकर लड़की और जोर से हंसने लगी।

हंसते हुए ही वह बोली, 'देखते नहीं मैं कौन हूं ? मैं एक लड़की हूं। अब पता चल गया कि नहीं ?'

यह उत्तर सुनकर राहुल कुछ झेंप-सा गया। परन्तु अब उसका भय जाता रहा। वह उस लड़की के रूप-सौंदर्य से बड़ा प्रभावित हुआ और मन-ही-मन उस लड़की को चाहने लगा। लेकिन उसके मन में एक विचार बार-बार उठता कि इतने सूने स्थान में जहां पेड़-पौधों के अलावा कोई नहीं, यह लड़की कैसे रहती है और वो भी अकेली ?

उसके मन में यह विचार भी आया कि इसने बुढ़िया का रूप क्यों लिया था ? क्या यह जानती थी कि मैं यहां आया हूं ? उसके मन में सन्देह-सा जाग्रित हुआ।

अपने शक का निवारण करने के लिए उस लड़की से राहुल ने पूछा, 'आप इस सुनसान स्थान पर अकेली कैसे रहती हैं ? क्या आपका कोई और नहीं है ?'

यह प्रश्न सुनकर लड़की पहले तो कुछ हिचकिचाई फिर उसने तुरन्त उत्तर दिया, 'मैं इस सुन्दर वन की देवी हूं मैं यहीं रहती हूं।

यह सुनकर राहुल के मन को कुछ सन्तोष हुआ और वह निश्चित हो गया। दोनों अब काफी हिल-मिल गये थे। राहुल को अचानक कुछ याद आया। वह सोचने लगा कि मैं भी कितना मूर्ख हूं। हम दोनों कितने हिल-मिल गए हैं लेकिन मैं अभी तक इस लड़की का नाम नहीं जानता।

यह सोचकर राहुल ने उस सुन्दरी से नाम पूछा तो उसने बताया कि उसका नाम 'नीलकन्ठ' है। लड़की ने अपना नाम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बताने के बाद उसका नाम भी पूछा। राहुल ने अपना नाम बता दिया।

इस प्रकार राहुल दो दिन तक उसी के साथ खेल कूद में खोया रहा। लड़की उसको हमेशा प्रसन्न रखने की कोशिश करती।

दो दिन बाद तीसरे दिन 'नीलकन्ठ' स्नान करने गई हुई थी। राहुल अकेला बैठा था कि अचानक उसके दिमाग को झटका लगा और उसको साधू का बताया आदेश याद आया उसने यह सोचा कि अभी तो मैं जाता हूं लेकिन काम बनने पर उसे अपने साथ ले जाऊंगा। वह बिना बताए ही वहां से चल पड़ा।

चलते-चलते कई दिन बीत गए। एक दिन वह उस स्थान पर पहुंच ही गया। उसने देखा चारों ओर पानी ही पानी था। जब उसने दूर तक दृष्टि दौड़ाई तो उसे वह महल दिखाई दे गया जिसकी बात साधु की आकाशवानी ने बताई थी।

राहुल को बहुत अच्छा तैरना आता था। बचपन से ही उसने तैरना सीखा था और उसे तैरने का शौक भी था। वह पानी में कूद पड़ा और तैरता-तैरता महल तक पहुंच गया और महल की दीवार को पकड़कर ऊपर चढ़ गया।

वह अन्दर की ओर बढ़ने लगा। पूरा महल सोने का बना था। इस महल की हर चीज सोने की थी। इस महल का फर्श खिड़की, दरवाजे, छत, दीवार सब सोने की बनी थी। राहुल का ध्यान उस कलश की ओर था जिसका जिक्र साधू की आवाज़ ने किया था।

राहुल ने देखा महल में अनेक कमरे थे परन्तु किसी का दरवाजा भी खुला न था। महल एकदम सुनसान था जैसे वहां

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कोई न हो। राहुल सतर्कता से आगे बढ़ता गया। अभी वह घूम-घूम कर देख ही रहा था कि उसे फुँकार सी आवाज़ सुनाई पड़ी। वह पहले से ही सतर्क था। एकदम से पीछे मुड़कर देखा। देखते ही वह दो फर्लांग पीछे जा गिरा। उसने देखा एक बहुत बड़ा अजगर मुह बाये लटक रहा था। उसकी जीभ काफी लम्बी थी।

अजगर ने उसे खाने के लिए अपनी जीभ बढ़ाई। उस समय तक राहुल अपने आपको सम्भाल चुका था। उसने उस तलवार से वार किया जो उसको साधु ने दी थी। तलवार हवा से बातें करने लगी और उसने अजगर की जीभ के कई टुकड़े कर दिए। अब अजगर दर्द से तड़पने लगा। थोड़ी देर तड़पने के बाद अजगर ठंडा पड़ गया।

राहुल उसको वहीं छोड़ आगे बढ़ गया। वह महल के चारों ओर घूम आया परन्तु उसे कहीं से भी अन्दर जाने का रास्ता न मिला। अभी वह एक स्थान पर खड़ा ही हुया था कि उसे चीख सुनाई पडी। वह उसी ओर बढ़ा जिस ओर से चीख आई थी। यह चीख किसी लड़की की मालूम होती थी।

एक कमरे के बाहर जाकर वह रुक गया। उस कमरे के भीतर से ही चीखों की आवाज़ आ रही थी।

कोई लडकी बार-बार चीख रही थी 'बचाओ, बचाओ' राहुल तुरन्त भांप गया कि किसी लड़की को सहायता की जरूरत है। उसने जल्दी से तलवार को सोने के दरवाजे में खींचकर मारा। दरवाजे में लगी सोने की पत्ती एकदम कट गई। इसी प्रकार राहुल ने दो-तीन बार किया। सोने की एक बड़ी पत्ती कटकर नीचे गिर पड़ी। अब दरवाजे में इतना रास्ता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बन चुका था कि वह भीतर जा सके।

राहुल ने एक छलांग लगाई और भीतर पहुंच गया। लेकिन वह लड़की को देखते ही आश्चर्यचकित रह गया। यह वही लड़की थी, जो उसे रास्ते में बुढ़िया के रूप में मिली थी। जिसे वह चाहने भी लगा था। जिसका नाम 'नीलकन्ठ' था।

उसने देखा एक बदसूरत सा आदमी उसका गला दबा रहा था। लेकिन राहुल को देखते ही वह आदमी उसकी ओर लपका। उसका चेहरा बड़ा भयानक था। सिर से वह गंजा था। उसकी गोल-गोल बड़ी-बड़ी डरावनी आंखें थीं। उसके आगे के तीन दांत बहुत अधिक बड़े थे जो उसके होठों से बाहर दिखाई दे रहे थे। उस आदमी का रंग भी बहुत काला था। वह किसी राक्षस से कम न दिखाई दे रहा था।

राहुल ने भी अपने आपको तैयार कर लिया और वह भी अवसर खोज रहा था कि किस प्रकार वार किया जाए। फिर वे दोनों आपस में गुंथ गए। दोनों ही शक्तिवान थे। काफी घमासान युद्ध हुआ।

अचानक ही राहुल की तलवार चली और हवा से बातें करने लगी। अब उस आदमी ने जादू से अनेक हथियार बना राहुल पर वार किया परन्तु तलवार इतनी तेज चल रही थी कि उसका एक भी हथियार उस तलवार के आगे न टिक सका। कोई उपाय बचाव का न देखकर उस आदमी ने अचानक ही राहुल के पांव पकड़ कर खींच लिये। राहुल इस वार के लिए कतई तैयार न था। वह धड़ाम से जमींन पर गिर पड़ा। अच्छा मौका पाकर तान्त्रिक उसपर वार करने ही वाला था कि राहुल को रस्सी की याद आ गई। उसने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

झट से रस्सी को कहा—

'चल मेरी रस्सी दिखा कमाल।' राहुल का इतना कहना था कि रस्सी ने उस तांत्रिक को बांध लिया। राहुल ने तुरन्त उठकर तांत्रिक के तलवार से दो टुकड़े कर दिए। इस प्रकार तांत्रिक का अन्त हुआ।

नीलकन्ठ जो मन्त्रमुग्ध सी राहुल की बहादुरी को देख रही थी राहुल को सही सलामत पाकर बहुत खुश हुई। वह भी उसे मन-प्राण से चाहने लगी थी।

राहुल जब अपना काम समाप्त कर चुका तो उसने नीलकन्ठ की ओर ध्यान दिया और उससे यहां तक पहुंचने का कारण पूछा।

नीलकन्ठ ने तब राहुल को अपनी पूरी कहानी बताई उसने बताया कि वह 'सिकोई' नामक देश की राजकुमारी है। इस प्रकार उसने कहानी आरम्भ की—

'मैं एक दिन अपने शाही बाग में अपनी सहेलियों के संग खेल रही थी। न जाने यह कहां से वहां आ निकला। चूंकि मैं अपनी सहेलियों में सबसे अधिक सुन्दर थी इसलिए यह मुझे ही जबरदस्ती यहां ले आया। कई दिन तक मैं इस कमरे में बन्द रही। फिर एक दिन इस कमरे में आया और शादी की इच्छा जाहिर की। मैंने शादी करने से बिल्कुल साफ मना कर दिया। उस दिन तो वह चला गया।

परन्तु एक दिन वह फिर यहां मेरे कमरे में आया और मुझे तुम्हारे बारे में बताकर बोला—

'ऐ लड़की तुझे इसके मार्ग में बाधा डालनी है ताकि वह लड़का इस महल तक न पहुंचे।' इसने मुझे धमकी दी कि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यदि यह काम न किया तो मुझे जान से मार डालेगा।

मैं डर गई और मैंने उसकी बात स्वीकार कर ली। लेकिन जब मैंने तुम्हें देखा और तुम्हारे दयालु स्वभाव से परिचित हुई तो मेरा मन बदल गया। मैं तुम्हें मन-ही-मन चाहने लगी। एक दिन मैं जानबूझकर तुम्हें छोड़कर नहाने चली गई, ताकि तुम्हें अपना फर्ज याद आ जाए। ऐसा ही हुआ जैसा मैं चाहती थी। तम मुझे छोड़कर चले गए।

यह सब बात तांत्रिक जान गया और उसने मुझे फिर इस कमरे में बन्द कर दिया। आज इसने फिर मुझसे जबरदस्ती शादी करनी चाही तो मैंने फिर इन्कार कर दिया। क्रोध में आकर इसने मुझे मारना चाहा लेकिन सौभाग्यवश तुम आ गए और मुझे बचा लिया।' इतना कहकर 'नीलकन्ठ' राजकुमारी चुप हो गई।

राहुल तो नीलकन्ठ को चाहता ही था। उसने नीलकन्ठ को अपने साथ ले जाने का निश्चय कर लिया। परन्तु अभी तो उसे अपना उद्देश्य पूरा करना था। उसने नीलकन्ठ से उस कलश के बारे में पूछा जो उसे चाहिए था। नीलकन्ठ उस कलश के राज को जानती थी। क्योंकि उस कलश तक पहुंचने का एकमात्र रास्ता उसी कमरे में था जिससे वह तांत्रिक वहां जाया करता था।

नीलकन्ठ ने राहुल को वह रास्ता बता दिया। राहुल उस स्थान तक पहुंचा जहां वह कलश था। उसने देखा एक चांदी का कलश कमरे के बिल्कुल मध्य में था। उसने तुरन्त कलश उठाया और बाहर आ गया। फिर वे दोनों कलश लेकर महल से बाहर आ गए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उन्होंने देखा एक बहुत सुन्दर हंस खड़ा था। फिर उन्हें एक आवाज सुनाई दी जो उसी साधु की थी।

'बेटा तुम दोनों इस हंस पर बैठ जाओ।' दोनों ने आदेश का पालन किया। जैसे ही वे दोनों हंस पर बैठे, हंस उड़ने लगा।

वह हंस सात पहाड़ पार कर एक स्थान पर उतर गया। दोनों ने देखा एक हड्डियों का ढांचा पड़ा है। फिर वही आवाज आई।

'बेटे, इस कलश में से पानी निकालकर इस हड्डियों के ढांचे पर छिड़क दो।' राहुल ने ऐसा ही किया। जैसे ही ढांचे पर उस अमृत जल के छींटे पड़े वैसे ही वह ढांचा पूरा हाड़ मांस का मनुष्य बन गया।

दोनों ने देखा एक साधु उनके सामने खड़ा था। वह साधू राहुल से बड़ा प्रसन्न हुआ और दोनों को आशीर्वाद दिया। अब राहुल के हाथ भी ठीक हो चुके थे।

फिर वे दोनों उसी हंस पर बैठ गए। हंस उड़ता हुआ उस गांव में पहुंचा जहाँ उसकी मां और बुढ़िया रहती थी।

मां और बुढ़िया राहुल को पाकर बड़े प्रसन्न हुए। उन दोनों ने जब राहुल के साथ एक अनजान नवयुवती को देखा तो राहुल से उसके बारे में पूछा।

राहुल ने उनको अपनी सारी घटना आरम्भ से आखिर तक कह सुनाई। इतनी सुन्दर बहू पाकर वे दोनों फूली नहीं समायीं।

राहुल बुढ़िया समेत अपनी मां और नीलकन्ठ को लेकर अपने देश में पहुंचा। जब वे वहां पहुंचे तो सारी रानियां मर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चुकी थीं और राजा भी बहुत बीमार थे उनकी हालत चिन्ता-जनक थी।

राहुल ने तुरन्त उस चांदी के कलश में से पानी निकाला और राजा के मुँह में डाल दिया। राजा के मुंह में पानी जाते ही राजा का स्वास्थ्य एकदम ठीक हो गया। राजा ने जब राहुल और छोटी रानी को अपने समीप खड़े देखा तो एकदम आश्चर्यचकित हो गए। राहुल को तो वे पहचान ही न पाए। राहुल अब पहले जैसा बच्चा न रहा था। अब वह पूरे अठारह साल का नवयुवक था। राजा उन सबको पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ।

कुछ दिनों बाद राहुल को राजतिलक लगाया गया। राजा ने अपना सारा राजपाट राहुल को सौंप दिया। फिर राहुल और नीलकन्ठ की शादी बड़ी धूम-धाम से की गई। सारे देश में फिर से एक बार खुशी की लहर दौड़ गई। राज्य फिर से हरा भरा हो उठा।

○

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परोपकारी माधव

बहुत पुरानी बात है। भरतपुर राज्य में एक गरीब विधवा रहा करती थी। वह बहुत कष्ट उठाकर जैसे-तैसे जिन्दगी बसर कर रही थी। उसके एक लड़का था उसका नाम था माधव। वह बहुत ही नेक और सज्जन था। दुखियों की मदद करना उसका परम धर्म था। मां जो कुछ भी कार्य करने को कहती वह उसको अवश्य करता था। वह अपनी मस्ती में रहता था।

एक दिन भरतपुर राज्य पर एक-दूसरे राज्य द्वारा आक्रमण की सूचना मिली। राज्य भर में तैयारी होने लगी ताकि युद्ध का मुकाबला किया जा सके। एक दिन माधव की मां उससे बोली बेटा तू भी राजा के पास जा और कई काम मांग। माधव ने अपनी मां की आज्ञा का पालन किया।

वह राजा के पास पहुंचा और बोला, 'महाराज आप मुझे कोई काम दे दीजिए। राजा को उस पर दया आ गई और उसने उसे अपना नौकर रख लिया। उसी समय दूसरे राज्य ने भरतपुर पर आक्रमण कर दिया। फौजें युद्ध के मैदान पर डटी हुई थीं। दोनों तरफ की सेनाओं में घमासान युद्ध हो रहा था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक दिन माधव अपनी मां से मिलने अपने गांव की तरफ जा रहा था कि मार्ग में उसने कई बन्दियों को आते देखा। उसने सिपाहियों से पूछा।

'क्यों भाई इन लोगों का क्या कसूर है जो इनको बन्दी बनाया गया है।'

'ये वे व्यक्ति हैं जिन पर अन्य राज्य का जासूस होने का शक है।' सिपाहियों ने जवाब दिया। परन्तु माधव को विश्वास न आया। इतनें में एक बूढ़ा व्यक्ति माधव के समीप आया और दयनिय स्वर में बोला—

'बेटा अगर तुम मेरा एक काम कर दो तो मैं तुम्हारा यह एहसान जिन्दगी भर नहीं भूल सकूंगा।'

'बोलो बाबा क्या काम है ? माधव को उस बूढ़े पर दया आ गई। बूढ़े ने अपने फटे कटे चिथडे कपड़ों में से एक पोटली निकाल माधव को देते हुए कहा।

'बेटा भरतपुर के जंगल में मेरा एक लड़का टूटी-फूटी झोंपड़ी में रहता है। तुम उसे यह पोटली दे आना बस।'

माधव ने बूढ़े के हाथ से वह पोटली ले ली और भरतपुर के जंगल की तरफ चल पड़ा। चलते-चलते वह जंगल में पहुंच गया। माधव चूंकि परोपकारी व्यक्ति था। इसलिए उसने पहिले बूढ़े का कार्य करने का निश्चय किया था। वह अपनी मां से भी न मिलने गया।

आखिरकार उसने वह झोंपड़ी भी ढूंढ़ निकाली जहां पर बूढ़े का लड़का रहता था। माधव ने झोंपड़ी का द्वार खटखटाया अन्दर से एक युवक निकला। माधव ने एक पोटली उस युवक को देते हुए बूढ़े की बात बताई। उस युवक ने बताया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कि वही उस बूढ़े का पुत्र है । उस युवक ने फटाफट उस पोटली को खोला उसके अन्दर कुछ कागज पत्र थे । एक कागज पर लिखा था ।

इस परोपकारी व्यक्ति को कैद कर लो तभी [illegible] छूटने की आशा हो सकती है । यह इबारत पढ़ते ही वह युवक झोंपड़ी के अन्दर गया और थोड़ी देर बाद फिर वापिस आ गया । अब उसके साथ दो व्यक्ति और थे । माधव कुछ समझ भी न पाया था कि उन्होंने उसे रस्सियों से जकड़ दिया और झोंपड़ी में डाल चले गए । माधव समझ गया वह किसी भयंकर षड्यन्त्र का शिकार हो चुका है ।

माधव काफी शक्तिशाली था । उसने अपने बन्धन धीरे-धीरे ढ़ीले कर खोल डाले । परन्तु उसी प्रकार पड़ा रहा । जब रात आई तो वह युवक अपने अन्य दो साथियों सहित सैनिक वेश में दिखाई दिया । उसके हाथ में तलवार थी । जैसे ही उसने झोंपड़ी में प्रवेश किया माधव ने झपटकर उसके हाथ से तलवार छीन ली और थोड़ी ही देर में युवक को उसके दोनों साथियों सहित रस्सियों से जकड़ दिया । वे तीनों ही बेहोश हो चुके थे । माधव उनको कैदी अवस्था में राजमहल में ले आया । राजा को माधव ने सारी कहानी सुनाई । राजा अति प्रसन्न हुए । वे समझ गए कि माधव ने अनजाने में अन्य देश के जासूस को पकड़ लिया है ।

राजा ने बन्दियों में से उस बूढ़े को भी ढुंढ़वा लिया जिसने वह पोटली माधव को दी थी । थोड़ी सख्ती करने पर ही उन्होंने अपना भेद उगल दिया । वास्तव में वह युवक उस बूढ़े व्यक्ति का पुत्र था और वह बूढ़ा शत्रु देश के राजा का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चचेरा भाई था।

राजा ने शत्रु राज्य के राजा को इस बात की सूचना भिजवाई की कि अगर उसने अपनी सेना को वापिस न किया तो उसके चचेरे भाई एवं भतीजे का सिर कटवा दिया जाएगा। शत्रु राजा ने परिस्थिति की भयंकरता को समझा और अपनी सेना को वापिस बुला लिया।

इस प्रकार माधव ने अपने राज्य को एक भयंकर युद्ध का सामना करने से एवं लाखों रुपए के नुकसान से बचा दिया। राजा माधव से बहुत खुश थे इसलिए उन्होंने माधव को अपना वजीर नियुक्त कर दिया।

परन्तु शायद यही बात माधव के पक्ष में बुरी साबित हुई उसका महल में आना-जाना रहता था और इसी मध्य राजकुमारी की नजरें भी उसके सुन्दर और बलिष्ट शरीर पर पड़ीं। राजकुमारी बुरी तरह से माधव पर मोहित थी। जब उसे यह पता लगा कि माधव ही वह व्यक्ति है जिसने देश को भयानक युद्ध से बचाया है तो वह उसे और भी चाहने लगी। माधव ने भी राजकुमारी को देखा था और उसकी सुन्दरता पर बुरी तरह मुग्ध था। परन्तु वह ऊपरी तौर पर किसी प्रकार के भाव भी अपने चेहरे पर नहीं आने देता था।

राजकुमारी राजलक्ष्मी अब जवान हो चुकी थी और राजा को उसके विवाह की चिन्ता सताने लगी थी। एक दिन वे राजकुमारी के पास गए और बोले—

'बेटी अब तुम जवान हो गई हो और हम तुम्हारा विवाह शीघ्र से शीघ्र कर देना चाहते हैं। अगर तुम्हारी नजरों में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कोई राजकुमार है तो बताओ। हम उसी से तुम्हारा विवाह करा देंगे।'

'पिताजी ! मैं तो आपके वजीर माधव से विवाह कर सुखी रह सकूंगी।' राजकुमारी ने अपना मत जाहिर किया।

राजा स्तब्ध खड़े रह गए। उन्हें स्वप्न में भी राजकुमारी राजलक्ष्मी से इस प्रकार के उत्तर की आशा नहीं थी।

'यह तुम क्या कह रही हो।' राजा आवेश में बोले।

'मैं ठीक ही कह रही हूं। अगर मैं विवाह करूंगी तो माधव से अन्यथा किसी से नहीं।' इतना कह राजकुमारी दौड़ती हुई शयनकक्ष में चली गई।

राजा आग बबूले हो गए और क्रोधित क्यों न होते। उनकी रगों में राज वंश का खून दौड़ रहा था। वह जानबूझ कर अपनी पुत्री का हाथ एक मामूली व्यक्ति के हाथ में कैसे दे सकते थे। जबकि माधव उनका सेवक था। राजा को जबरदस्त मानसिक अघात पहुंचा। उन्होंने क्रोध में आ माधव को पद से हटा दिया। माधव की समझ में न आया कि इसका क्या कारण हो सकता है। वह दुखी मन से चुपचाप अपने घर की तरफ चल पड़ा।

जब काफी दूर निकल गया और उसे बड़े जोर की प्यास लगने लगी तो वह पानी की तालाश में इधर-उधर देखने लगा। काफी दूरी पर उसे एक तालाब नजर आया। वह उसी तरफ बढ़ने लगा। तालाब के निकट पहुंच उसने जी भर कर पानी पिया और वापिस चल पड़ा। अभी वह मुश्किल से दो कदम आगे बढ़ा था कि उसे तालाब के निकट कांटेदार झाड़ी से खरखराहट की आवाज सुनाई दी। उसने उत्सुकता वश झाड़ी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

की तरफ देखा। उसने देखा एक कछुआ बुरी तरह से कांटेदार झाड़ी में फंसा हुआ है। कछुआ झाड़ी से निकलने का लाख प्रयत्न कर रहा था परन्तु अपने प्रयत्न में असफल हो गया था। उसका शरीर भी जगह-जगह से घायल हो चुका था।

माधव ने थोड़ा प्रयत्न कर कछुवे को झाड़ी से मुक्त करा कर उसकी मरहम पट्टी भी कर दी। कछुवे को आराम पहुंचा। वह माधव को वहीं नदी किनारे रुकने को कह तालाब में घुस गया। थोड़ी सो देर बाद वह कछुवा फिर लौटकर आया और बोला—

'हे परोपकारी मानव ! यह मणी तुम रख लो।' यह कहते हुए कछुवे ने एक मणी माधव की तरफ बढ़ा दी। माधव ने वह मणी ले ली।

'इसे थोड़ा सा घिसकर, जो कुछ भी तुम इससे मांगोगे यह तुम्हें देगा।' कछुवे ने माधव से कहा और फिर तालाब के पानी में गोता लगा गया।

माधव भी प्रसन्न हो वहां से चल पड़ा। मार्ग में उसे बड़ी जोर की भूख लगी। उसने उस मणी को थोड़ा-सा घिसा।

'क्या हुक्म है मालिक।' आवाज़ सुनाई दी।

'खाने का स्वाष्टि भोजन लाओ।' माधव बोला।

थोड़ी ही देर में वहां भोजनों की प्लेटें लगी हुईं नजर आ रही थीं। माधव ने पेट भर भोजन किया और घर की तरफ चल पड़ा। जब वह अपने गांव पहुंचा तो गांव की बड़ी बुरी अवस्था देखी। गांव में अकाल पड़ा हुआ था। लोग भूख और प्यास से मर रहे थे।

माधव ने मणी घिसकर आदेश दिया कि हर किस्म की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भुखमरी और बीमारी दूर होनी चाहिए।

दूसरे दिन किसान लोग हैरान रह गए उनके खेतों में पकी हुई फसल लहलहा रही थी। माधव ने सबको फसल काटने के लिए कहा। और लोगों को बताया कि कल बड़ी जोरदार वर्षा होगी। अगर फसल न कटी तो उसका नाश हो जाएगा।

परन्तु किसी ने भी उसकी बातों पर विश्वास न किया। क्योंकि उनकी निगाह में यह सब ईश्वर का चमत्कार था और भगवान कोई चीज देकर वापस नहीं ले सकता। उन्होंने उस दिन फसल न काटी। परन्तु आधी रात के बाद बड़ी घमासान वर्षा हुई जिसने सबके हृदय को दहला कर रख दिया। सब लोग समझ गए थे कि अब उनकी फसल अवश्य ही नष्ट हो गई होगी।

सुबह तक वर्षा पूर्णतया रुक चुकी थी। सब लोग अपने-अपने घरों से फसल की हालत देखने के लिए दौड़े-दौड़ कर निकल पड़े और फिर उनके सामने दूसरा आश्चर्य उपस्थित था। फसल काटी जा चुकी थी। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि आधी रात के अन्दर-ही-अन्दर सारी फसल को कौन काटकर ले गया।

तभी उन्हें माधव आता दिखाई दिया। माधव उनके निकट आकर बोला, 'आप लोगों के भयभीय होने की कोई आवश्यकता नहीं है। सारी फसल काटी जा चुकी है और मेरे गोदाम में उपस्थित है।

और फिर उस गांव के लोग माधव को देवता के समान पूजने लगे। माधव लोगों के दुखों में मदद करता रहता था। धीरे-धीरे उसके यश की चर्चा दूर-दूर तक फैलने लगी। राजा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

और राजकुमारी के कानों में भी खबर पहुंची। राजकुमारी माधव के वियोग में वैसे ही बिस्तर से लग चुकी थी। माधव के यश की खबर सुन उसकी आंखों से खुशी के आसुओं की धारा बह निकली।

राजा भी राजकुमारी की इस दयनीय अवस्था से पूर्णत्या परिचित थे। उनसे अपनी पुत्री की यह अवस्था और न देखी जा रही थी। उन्होंने निश्चय किया की वे पहले माधव की शक्ति सामर्थ की परीक्षा लेंगे। अगर वह उसमें सफल हो गया तो वे अपनी पुत्री का विवाह माधव से ही कर देंगे। अपनी मनोकामना राजकुमारी को भी बताई। राजकुमारी सहर्ष तैयार हो गई।

दूसरे दिन ही राजा ने अपने सैनिकों को माधव को आदर पूर्वक राजमहल में ले आने का हुक्म दिया। उसी समय राजसी रथ आभूषणों से सुस्सजित माधव के घर की तरफ रवाना हो गया।

माधव अपने घर के सामने सुन्दर रथ को रुकता देख आश्चर्य में पड़ गया। परन्तु जब सिपाहियों ने बताया कि महाराज ने उसे याद किया है तो वह सहर्ष तैयार हो गया। और एक बार फिर उसके हृदय में राजकुमारी राजलक्ष्मी की याद ताजा हो उठी। वह राजकुमारी की यादों में खोया हुआ था और रथ राजमहल की तरफ बढ़ता जा रहा था।

भाग्य की तन्द्रा तब भंग हुई जब रथ राजमहल के सामने जा कर रुक गया। वह रथ से उतरा और महाराज के सामने उपस्थित हुआ। महाराज बोले—

"माधव! राजकुमारी तुमसे ही विवाह करना चाहती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परन्तु राजकुमारी से विवाह करने से पहले तुम्हें मेरे तीन काम करने होंगे। अगर तुम कार्य करने में सफल हो गये तो मैं निश्चित ही राजकुमारी का हाथ न केवल तुम्हारे हाथ में सौंप दूंगा बल्कि अपना आधाराजपाट भी तुमको सौंप दूंगा। और अगर तुम काम करने में सफल न हो सके तो तुम्हारा सिर धड़ से अलग कर दिया जायेगा।" इतना कह महाराज चुप हो गये और माधव के चेहरे की तरफ घूर कर देखने लगे।

माधव ने कुछ देर सोचा और महाराज की शर्त को मंजूर कर लिया। फिर माधव को महल के अतिथि ग्रह में भेज दिया गया। जहां उसकी सुविधा का पूर्ण प्रबन्ध था। दूसरे दिन उसे राजा के सामने उपस्थित होना था और राजा द्वारा बताए जाने वाले कार्यों को पूरा करना था। वह रात्रि को निश्चिन्तता की नींद सोया।

दूसरे दिन उसे फिर महाराजा के सामने प्रस्तुत किया गया। राजा उसे एक सौ वर्गमील के स्थान में फैले मैदान में ले गया और बोला, 'तुमको अकेले यह सारी घास काटनी है और फिर पूर्ववत चिपकानी है। यह कार्य सूर्य छुपने से पूर्व समाप्त हो जाना चाहिए।' इतना कह महाराज उसको अकेला छोड़ वहां से चले गए।

माधव की समझ में राजा का यह कार्य न आया। परन्तु मरता क्या न करता। वह एक हंसिए से घास काटने लगा। दोपहर हो गई अभी वह थोड़ी सी ही घास काट पाया था। वह समझ चुका था कि राजा अब अवश्य ही उसका सिर कटवा देगा और वह राजकुमारी से विवाह की तमन्ना अपने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हृदय में लिए ही स्वर्ग सिधार जाएगा।

परन्तु तभी उसे अपनी मणी का ख्याल आया। माधव ने फ़ौरन मणी निकाली और उसे अपनी हथेली पर घिसा।

'क्या हुक्म है मालिक।' आवाज़ आई।

'इस सौ वर्गमील में फैले मैदान की घास को काटना है और फिर जोड़ना है। परन्तु जोड़ ऐसा हो कि जोड़ने के बाद उसका निशान साफ दिखाई दे।' माधव ने इच्छा प्रकट की।

'ऐसा ही होगा मालिक।' आवाज फिर सुनाई दी।

माधव एक छायादार वृक्ष के नीचे जाकर लेट गया। जब उसकी नींद खुली तो सूर्य पश्चिम में डूबने वाला था। वह फौरन उठकर मैदान पर पहुंच गया और हंसिया लेकर खड़ा हो गया। तभी उसे दूर से राजा आता हुआ दिखाई दिया। राजा के निकट आने पर माधव राजा को काम समाप्ती की सूचना दी। राजा ने घास को ध्यानपूर्वक देखा सब घास पर जोड़ के निशान साफ मौजूद थे। उनकी आंखें आश्चर्य से फैल गईं। वह कभी सोच भी नहीं सकते थे कि माधव यह कार्य करने में सफल भी हो सकेगा।

दूसरे दिन राजा माधव से बोले—

'माधव आजकल हमारे राज्य में तरह-तरह की बीमारियां फैल रही हैं। इन सबका कारण है मच्छर और मक्खियों का भारी तादाद में होना। अब तुम्हें ऐसा करना होगा कि इन सब मक्खियों और मच्छरों को हमारे राज्य से बाहर निकाल देना। अगर तुम इस कार्य में सफल न हुए तो तुम्हारा सिर कटवा दिया जाएगा।

महाराज का यह कार्य भी माधव को बड़ा बेढंगा लगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi